रजिस्ट्री संख्या डी एल-33001/92 REGISTERED NO. DL-33001/92

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 15] नई दिल्ली, शनिवार, अप्रैल 11, 1992 (चैत्र 22, 1914)
No. 15] NEW DELHI, SATURDAY, APRIL 11, 1992 (CHAITRA 22, 1914)

(इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके)
(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय-सूची

	पृष्ठ
भाग I—खण्ड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं	317
भाग I—खण्ड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं . . .	405
भाग I—खण्ड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं . . .	7
भाग I—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं . . .	639
भाग II—खण्ड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	*
भाग II—खण्ड 1-क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ	*
भाग II—खण्ड 2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट	*
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिनमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं)	*
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं . .	*
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिनमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी प्राधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं)	*
भाग II—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश . .	*
भाग III—खण्ड 1—उच्च न्यायालयों, नियंत्रक और महालेखा परीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं . . .	353
भाग III—खण्ड 2—पेटेन्ट कार्यालय द्वारा जारी की गई पेटेन्टों और डिजाइनों से संबंधित अधिसूचनाएं और नोटिस . .	451
भाग III—खण्ड 3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	*
भाग III—खण्ड 4—विविध अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं . . .	1233
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस . . .	59
भाग V—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को दर्शाने वाला अनुपूरक .	*

*प्राप्त नहीं ।

CONTENTS

	PAGE
PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court.	317
PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	405
PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence . . .	7
PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence	639
PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 1-A—Authoritative texts in Hindi Language of Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills . .	*
PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (i)—General Statutory Rules (including Orders, Bye-laws, etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India, (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories) .	*
PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts, Published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Govern nent of India (including the Ministry of Defence) and by General Authorities (other than Administration of Union Territories) . .	*
PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence .	*
PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India . . .	353
PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs . . .	451
PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	*
PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	1233
PART IV—Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies .	59
PART V—Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc. both in English and Hindi	*

*Folio Nos. not received.

भाग I—खण्ड 1
[PART I--SECTION 1]

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 26 जनवरी 1992

सं० 20-प्रेज/92—राष्ट्रपति, निम्नलिखित व्यक्तियों को उनके असाधारण वीरतापूर्ण कार्यों के लिए "कीर्ति चक्र" प्रदान किए जाने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1 जे० सी०-169170 सूबेदार नौपा राम, (मरणोपरान्त)
जाट रेजिमेंट
(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 12 फरवरी, 1991)

12 फरवरी 1991 को 18 जाट रेजिमेंट का त्वरित जवाबी कार्रवाई दल अमृतसर जिले के मालियान गांव के निकट भारी मेघा नाले के किनारे-किनारे गश्त लगा रहा था। सूबेदार नौपा राम इस गश्ती दल के एक सदस्य थे। उन्होंने एक आदमी को संदेहास्पद स्थिति में एक फार्म हाउस से निकलते हुए देखा। उस संदिग्ध व्यक्ति को पकड़ने के उद्देश्य से इस दल के कमांडर ने तत्काल एक योजना बनाई। दल तीन भागों में बट गया, एक-एक अफसर के नेतृत्व में दो दल उस संदिग्ध व्यक्ति को घेरने के लिए दोनों किनारों की ओर आगे बढ़े और सूबेदार नौपा राम के नेतृत्व में तीसरे दल को उस व्यक्ति का पीछा करके उसे पकड़ने का निर्देश दिया। उस क्षेत्र में गन्ने के खेतों तथा सफेदे के वृक्षों और खेती बाड़ी की वजह से वहां झाड़-झंखाड़ पड़ा हुआ था। सेना के जवानों को देख कर यह आदमी भागने लगा। उस समय तक सूबेदार नौपा राम ने अपने दल को संगठित करके उसका पीछा करना शुरू कर दिया। पीछा किए जाते समय उग्रवादी खेतों और वृक्षों से उपलब्ध आड़ का फायदा उठाकर अपनी ए० के०-47 असाल्ट से गोली-बारी करता रहा। सूबेदार नौपा राम ने उसकी गोली-बारी का जवाब दिए बिना उसका पीछा करना जारी रखा। तेज धावक होने के कारण उग्रवादी का पीछा करते हुए उनके बीच केवल 10 मीटर की ही दूरी रह गई। तब उन्होंने गोली मार कर उस उग्रवादी को घायल कर दिया। उस उग्रवादी ने भी जवाबी गोलीबारी की जिससे जे० सी० ओ० नौपा राम घायल हो गए। उसी समय उन्हें ज्ञात हुआ कि उनकी मैगजीन खाली है और उनके पास मैगजीन बदलने का भी समय नहीं था। अतः वे उस उग्रवादी पर झपट पड़े और उसकी ए० के०-47 राइफल के बैरल को कस कर पकड़ लिया। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद उन्होंने उग्रवादी को जकड़ते समय, जो कि भागने का प्रयास कर रहा था, आश्चर्यजनक साहस एवं वीरता का परिचय दिया। उन दोनों की हाथा-पाई शुरू हो गई। अपने घावों से हो रहे निरन्तर रक्तस्राव की बिलकुल भी चिन्ता किए बिना वे उग्रवादी से जूझते रहे और किसी प्रकार उस पर काबू पाए रहे। उन्होंने उग्रवादी को अधिक दूर नहीं भागने दिया इस बीच लांस हवलदार राधा करण वहां पहुंच गए और गोली चला कर उग्रवादी को मार दिया। यह उग्रवादी खालिस्तान कमांडो फोर्स का स्वयंभू एरिया कमांडर स्वर्णसिंह सोना था। उसके पास एक ए० के०-47 राइफल, बड़ी मात्रा में गोला बारूद और दस्तावेज, जिनमें खालिस्तान कमांडो फोर्स के अध्यक्ष के पत्र भी शामिल हैं, बरामद हुए। परन्तु साहसी जूनियर कमीशन अफसर अपने घावों की वजह से वीरगति को प्राप्त हुए।

इस प्रकार सूबेदार नौपा राम ने उग्रवादी का सामना करते हुए उत्कृष्ट वीरता का परिचय दिया और सेना की उच्चतम परम्परा के अनुरूप अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दिया।

2 जे० सी०-73334 नायब सूबेदार पदम बहादुर छेत्री,
असम राइफल्स
(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 5 मई, 1991)

5 मई, 1991 को नायब सूबेदार पदम बहादुर छेत्री 15 जवानों के साथ बहुत अधिक ऊंचाई पर बर्फीले क्षेत्र में स्थित दूधी चौकी पर कब्जा करने के लिए जा रहे थे। रास्ते में इनसे दल की राष्ट्र विरोधी तत्वों के एक काफी बड़े दल के साथ भीषण मुठभेड़ हो गई। यह पता चलने पर कि इनके दल में अन्य रैंक के थोड़े जवान शामिल हैं, राष्ट्र विरोधी तत्वों ने इनके दल को घेरने का प्रयास किया। परन्तु नायब सूबेदार पदम बहादुर छेत्री ने उनका प्रयास विफल कर दिया। इन्होंने अपने जवानों को राष्ट्र विरोधी तत्वों का मुकाबला करने के लिए प्रभावशाली रूप से तैनात किया और उनके भागने के सभी रास्ते बंद कर दिए। मुठभेड़ के दौरान इनके दल के तीन जवान हताहत हो गए जिससे इनके दल के सदस्यों की संख्या घटकर 12 रह गई। परन्तु इन्होंने हिम्मत नहीं हारी और करीब साढ़े पांच घंटे तक उन राष्ट्र विरोधी तत्वों का मुकाबला करते रहे। इस कार्रवाई में इन्होंने स्वयं 9 राष्ट्र विरोधियों को मार गिराया जबकि इनके दल ने उनमें से 29 अन्य राष्ट्र विरोधियों को मार गिराया।

3. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट मैसूर कृष्णास्वामी राम प्रसाद,
(18440) एयरोनाटिकस इंजीनियर (मैकेनिकल)
(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 17 जुलाई, 1991।

15 जुलाई, 1991 को फ्लाइट लेफ्टिनेंट मैसूर कृष्णास्वामी राम प्रसाद को युद्धक स्क्वाड्रन ने सक्रिय युद्धाभ्यास के लिए मिग एयर फोर्स के लिए प्रस्थान किया। 17 जुलाई, 1991 को मिग 27 एम० एल० एयर क्राफ्ट नम्बर टी० एस० 539 के पिछले फ्यूजलेज स्टेशन पर 250 कि० ग्रा० का एक बम और 30 एम० एम० फंट गन गोलाबारूद के 100 राउंड लगाए। तदुपरांत दो वायुयानों को एक साथ उड़ान भरने के लिए रन-वे पर लाइन में खड़ा किया गया और जैसे ही थ्रोटल खोला गया उसी समय दूसरे वायुयान के पायलट ने यह देखा कि वायुयान टी० एस०-539 के पिछले हिस्से से चिंगारियां और आग निकल रही है। टी० एस०-539 के पायलट को अग्नि के बारे में बताया गया और उससे तुरन्त अपने वायुयान से उतरने के लिए कहा गया। अग्नि शामक

वाहन के आने तक वायुयान का पिछला हिस्सा पूरी तरह अग्नि की चपेट में आ चुका था ।

यद्यपि आग बुझाने के प्रयास किए जा रहे थे परन्तु 250 कि० ग्रा० के बम के किसी भी समय फटने का गंभीर रूप से खतरा बना हुआ था । उसी समय फ्लाइट लेफ्टिनेंट राम प्रसाद वायुयान के निकट पहुंचे और अपने जीवन पर आसन्न खतरे की चिन्ता किए बगैर उत्कृष्ट सूझबूझ का परिचय देते हुए छलांग लगा कर काकपिट में घुस गये । उन्होंने बैटरी मास्टर और सभी आयुध उपस्करों के स्विच बंद कर दिए । नीचे कूदते समय रन-वे पर झाग और पानी फैला होने की वजह से फिसल गए जिससे उनकी टांग में चोट आ गई । परन्तु चोट की चिन्ता किए बगैर ये उस पैनल को खोलने के लिए आगे बढ़े जिसमें फ्यूल शाट आफ काक रखा हुआ था । आग को और अधिक फैलने से रोकने के लिए फ्यूल शाट काक को बंद करना आवश्यक था । पैनल के पास अग्नि बहुत अधिक होने की वजह से पैनल लाल सुर्ख हो गया था । अत्याधिक प्रयास के बाद वे पैनल को खोलने में सफल हो गए और अन्ततः उन्होंने हाथ से ही फ्यूल शाट आफ काक को बंद कर दिया । अत्यधिक ताप में किसी भी क्षण बम में विस्फोट होने के गंभीर खतरे को पूर्णतः जानते हुए भी फ्लाइट लेफ्टिनेंट प्रसाद 250 कि० ग्रा० के बम का फ्यूज निकालने तथा उसे पूर्णतः सुरक्षित करने के लिए आगे बढ़े । अत्यधिक ताप होने की वजह से रिलीज यूनिट का कार्टरिज भी चालू हो सकता था जिससे बम के आकस्मिक रूप से रिलीज हो कर उसमें विस्फोट होने का खतरा बना हुआ था । ऐसी स्थिति में इन्होंने इलैक्ट्रिक रिलीज यूनिट कार्टरिज हटाकर बम के विस्फोट से होने वाली दुर्घटना को समाप्त कर दिया । इसके बाद इन्होंने बिजली के कनैक्शन हटा दिए और 30 एम० एम० तोप को सुरक्षित कर दिया । इन्होंने समय पर जो कार्रवाई की उससे न केवल बहुमूल्य वायुयान और अधिक क्षतिग्रस्त होने से बच गया बल्कि कई व्यक्तियों के जीवन के संभावित खतरे से उनकी रक्षा की ।

इस प्रकार फ्लाइट लेफ्टिनेंट मैसूर कृष्णास्वामी राम प्रसाद ने उत्कृष्ट साहस और अत्यधिक खतरनाक परिस्थिति में काम करने की अनुकरणीय सूझबूझ का परिचय दिया ।

1 3984772, सिपाही स्वर्ण सिंह, (मरणोपरान्त)
18 डोगरा
पुरस्कार की प्रभावी तारीख 8 अगस्त, 1991 ।

8 अगस्त, 1991 को 18 डोगरा द्वारा बोल्याम कोनार और जफरवानी गांव की घेराबंदी करके तलाशी लिए जाने की कार्रवाई के दौरान सिपाही स्वर्ण सिंह को लगभग 50 मीटर की दूरी पर वृक्षों के एक झुरमुट में कुछ संदेहजनक गतिविधियों की भनक लगी । उन्होंने इसकी सूचना अपने प्लाटून कमांडर सेकन्ड लेफ्टिनेंट बी० जे० एस० संधू को दी । इसके पश्चात, प्लाटून कमांडर संधू छह जवानों को साथ लेकर संदिग्ध व्यक्तियों का मुकाबला करने और उन्हें पकड़ने के उद्देश्य से उक्त स्थल की ओर दौड़ पड़े । ये लोग उक्त स्थल की ओर बढ़ ही रहे थे कि उन पर भारी मात्रा में गोलीबारी होने लगी जिसमें एक यूनिवर्सल मशीन गन का इस्तेमाल भी किया जा रहा था । तुरन्त जवाबी कार्रवाई की गई और उक्त क्षेत्र को घेर लिया गया । गोलीबारी की आवाज सुनकर कैप्टन संदीप शाकला जो जफरवानी गांव में संदिग्ध व्यक्तियों की तालाशी कर रहे थे, तुरन्त जवाबी कार्रवाई करने वाले अपने दल के साथ तेजी के साथ गोलीबारी स्थल की ओर बढ़े । कैप्टन शाकला के वहां पहुंचने तक सैकण्ड लेफ्टिनेंट संधु और सिपाही स्वर्ण सिंह पूर्वी दिशा से राष्ट्रविरोधी तत्वों का मुकाबला कर रहे थे और शेष सैनिक पहाड़ी की उत्तरी दिशा में तैनात थे । वहां पहुंचने पर कैप्टन संदीप शाकला ने तुरन्त जवाबी कार्रवाई करने वाले अपने दल को दक्षिण-पूर्वी दिशा में भेज दिया और अपने आपरेटर को साथ लेकर स्वयं सेकन्ड लेफ्टिनेंट संधू के साथ आगे बढ़े । सिपाही स्वर्ण सिंह कैप्टन संदीप शाकला और सैकन्ड लेफ्टिनेंट संधू को सुरक्षा प्रदान करने के लिए सबसे आगे बढ़ कर चल रहे थे । इन्होंने रेंगते हुए गोलीबारी स्थल से 10 गज दूरी तक पहुंच कर वहां से राष्ट्रविरोधी तत्वों का मुकाबला करना शुरू कर दिया । सिपाही स्वर्ण सिंह ने असाधारण साहस और वीरता का परिचय देते हुए गोलाबारी-स्थल से सिर्फ 5 गज की दूरी पर एक वृक्ष की आड़ लेकर वहां छिपे 15 राष्ट्रविरोधी तत्वों पर गोलीबारी करके उनमें से एक को वहीं ढेर कर दिया । लेकिन यूनिवर्सल मशीन गन की एक गोली इस समय सिपाही की छाती में आ लगी । इसके बावजूद यह बहादुर जवान अत्याधिक खून बह जाने के कारण अचेत होने तक गोलीबारी करता रहा और बाद में उनकी मृत्यु हो गई । यदि वे अग्रणी रहकर ऐसा न करते तो उनके पीछे के दो अफसर और अन्य जवान हताहत हो जाते ।

इस प्रकार सिपाही स्वर्ण सिंह ने राष्ट्रविरोधी तत्वों का मुकाबला करते हुए असाधारण साहस, वीरता और आत्म बलिदान की भावना का परिचय दिया ।

5 मेजर मोहिन्दर सिंह पठानिया,
(आई० सी०-34879), पंजाब रेजिमेंट
(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 23 अगस्त, 1991)

23 अगस्त, 1991 को 19 पंजाब के कम्पनी कमांडर मेजर मोहिन्दर सिंह पठानिया को पुंछ सैक्टर के किरनी क्षेत्र "मुनोर हट" नामक स्थान से राष्ट्रविरोधी तत्वों का सफाया करने के लिए भेजा गया । कम्पनी का नेतृत्व करते हुए ये स्वयं सबसे आगे रहे और सबसे पहले इन्होंने ही हट पर आक्रमण किया । राष्ट्रविरोधी तत्व सकते में आकर मनोरहट के पिछवाड़े से भाग खड़े हुए । इस कार्रवाई में माथे पर चोट लगने के बावजूद मेजर पठानिया ने वहां से हटकर सुरक्षित स्थान पर जाने से मना कर दिया ।

'जालानी हट' नामक एक अन्य मोर्चे में राष्ट्रविरोधी तत्वों को खदेड़ने समय एक गश्तीदल जिसमें एक अफसर और 15 अन्य रैंक शामिल थे उनके द्वारा तोपखाने और स्वचालित हथियारों से की जा रही फायरिंग में घिर गया । उस गश्तीदल की सहायता के लिए मेजर मोहिन्दर सिंह पठानिया ने सही मौके पर कार्रवाई की और अपने 15 जवानों की टुकड़ी का नेतृत्व करते हुए उक्त घिरे हुए गश्तीदल के पास पहुंच गए । तत्पश्चात् इस वीर अफसर ने 'जलानी हट" पर आक्रमण कर दिया । भीषण मुठभेड़ के पश्चात् मेजर मोहिन्दर सिंह पठानिया "हट" पर कब्जा करने में कामयाब हो गए । राष्ट्रविरोधी तत्वों ने जालानी हट पर फिर से आक्रमण करने के लिए मोर्चा सम्भाल लिया परन्तु अनुकरणीय वीरता का परिचय देते हुए इस बहादुर अफसर ने एक खंदक से दूसरी खंदक में आ-जाकर अपने जवानों का हौसला बनाए रखा । राष्ट्रविरोधी तत्वों ने खोये गए जालानी हट पर फिर से कब्जा करने के लिए एक बार फिर प्रयास किया । लेकिन इस बहादुर कम्पनी कमांडर की प्रेरणा से ओत-प्रोत कमान के सैनिकों ने उनके आक्रमण को इस बार भी विफल कर दिया ।

इस प्रकार मेजर मोहिन्दर सिंह पठानिया ने पूरी सैन्य कार्रवाई के दौरान असाधारण बहादुरी अत्याधिक साहस, धैर्य और दृढ़ संकल्प का परिचय दिया ।

6 2875197, नायक हरि सिंह, (मरणोपरान्त)
4 राजपूताना राइफल्स,
(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 29 अगस्त, 1991)

नायक हरि सिंह, 4 राजपूताना राइफल्स के गश्तीदल में शामिल थे जो जम्मू और कश्मीर में कुपवाड़ा जिले के गुथम क्षेत्र में पाकिस्तानी सीमा पर नियंत्रण-रेखा के पास तैनात था । 29 अगस्त, 1991 को

उन्होंने लगभग 30 गज की दूरी पर उग्रवादियों के एक दल को देखा। उन्होंने अपने गश्तीदल को सचेत किया और निर्भीकतापूर्वक तड़ित वेग से उग्रवादियों पर टूट पड़े। इस कार्रवाई में उनके पेट में बंदूक की गोली आ लगी। परन्तु वे इससे विचलित नहीं हुए। उन्होंने एक उग्रवादी को मार गिराया और अपना आक्रमण जारी रखा। एक अन्य उग्रवादी की गोली से दूसरी बार घायल होने के बावजूद भी वह निर्भीक अफसर निरंतर आक्रमण करता रहा तथा एक और उग्रवादी को ढेर कर दिया। इस बीच एक गोली उनकी गर्दन को छेदते हुए निकल गई और वे उसी स्थान पर वीरगति को प्राप्त हो गए। उनके आक्रमण की प्रचण्डता एवं गति से उग्रवादी इतने अधिक भयभीत हो गए कि वे 28 एके–56 राइफलें, एक स्वचालित मशीन गन, दो राकेट लांचर और 5 हजार राउंड से अधिक गोलाबारूद छोड़ कर वहां से भाग गए।

इस प्रकार नायक हरि सिंह ने उग्रवादियों का मुकाबला करते हुए उत्कृष्ट वीरता, पराक्रम और आत्मोत्सर्ग का परिचय दिया।

7 कर्नल इन्द्रजीत सिंह (आई० सी०–22575),
वि० से० मे० इंफैंट्री,
(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 24 सितम्बर, 1991)

23/24 सितम्बर, 1991 की रात 7 असम राइफल्स के कमांडिंग अफसर कर्नल इन्द्रजीत सिंह पाकिस्तान में प्रशिक्षित राष्ट्रविरोधी तत्वों द्वारा कुपवाड़ा क्षेत्र में घुसपैठ रोकने के लिए तैनात सैन्य टुकड़ी का नेतृत्व कर रहे थे। 24 सितम्बर, 1991 को लगभग 0100 बजे इन्हें यह सूचना मिली कि एक गिरोह के सदस्य नियंत्रण रेखा के पार घुसपैठ कर रहे हैं। सूचना मिलते ही कर्नल इन्द्रजीत सिंह ने घुसपैठ वाले मार्ग पर घात लगाने की योजना बनाई। घात की कमान इन्होंने स्वयं सम्भाली। घुसपैठियों के घात-स्थल पर पहुंचते ही घेराबंदी मजबूत कर दी गई। घुसपैठियों को आत्मसमर्पण करने के लिए चेतावनी दी गई लेकिन घुसपैठियों ने भीषण गोलाबारी शुरू कर दी और इन पर हथगोले फेंके। कर्नल सिंह ने साहस और दृढ़संकल्प के साथ कार्रवाई की और घुसपैठियों पर अचूक गोलीबारी करने का निर्देश दिया तथा 21 घुसपैठियों को मार गिराया। एक घुसपैठिया घायल हो गया और उसे बंदी बना लिया। इस प्रकार इन्होंने 22 सदस्यों के घुसपैठियों के दल का पूर्णत सफाया कर दिया और इस कार्रवाई में एक भी भारतीय जवान हताहत नहीं हुआ। इस अत्याधिक सफल कार्रवाई में कुल मिलाकर 20 एके–56 राइफलें, 1 राकेट लांचर, 1 पिस्तौल, 3000 चक्र से अधिक मात्रा में वर्गीकृत गोलाबारूद और महत्वपूर्ण दस्तावेज बरामद हुए।

इस प्रकार, कर्नल इन्द्रजीत सिंह, वि० से० मे० ने घुसपैठियों के विरुद्ध सफलतापूर्वक संक्रियात्मक कार्रवाई के दौरान अदम्य साहस, उच्चकोटि के नेतृत्व, योजना बनाने की क्षमता और दूरदर्शिता का परिचय दिया।

8. श्री पडिल्लापल्ली श्रीनिवास, (मरणोपरान्त),
भारतीय वन सेवा,
पूर्व गोदावरी, आंध्र प्रदेश।
(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 10 नवम्बर, 1991)

कर्नाटक सरकार ने कर्नाटक, तामिलनाडु और केरल के जंगलों में लकड़ी की तस्करी में लगे वीरप्पन और उसके गिरोह को पकड़ने के लिए एक विशेष कृतिक बल का गठन किया था जिसमें भारतीय वन सेवा के कर्नाटक संवर्ग के अधिकारी श्री पी० श्रीनिवास एक सदस्य थे। यहां श्री पी० श्रीनिवास ने वनों में रह रहे आदिवासियों के लाभ के लिए अनेक कार्यक्रम चलाए और उस क्षेत्र में ऐसा वातावरण बना दिया जिससे वीरप्पन के लिए लकड़ी की तस्करी करना दुष्कर हो गया। इसलिए वीरप्पन और उसके गिरोह के लोगों ने श्रीनिवास को मारने का निश्चय कर लिया।

श्री श्रीनिवास मंदिर में पूजा-अर्चना कर रहे थे। उसी समय वीरप्पन का भाई अर्जुन उनसे मिला और बताया कि वीरप्पन आत्मसमर्पण चाहता है। श्री अर्जुन ने यह भी बताया कि आत्मसमर्पण के लिए वीरप्पन की शर्त यह है कि आत्मसमर्पण के समय पुलिस का कोई अधिकारी नहीं हो। इस सूचना के आधार पर श्री श्रीनिवास, मिलने के पूर्व निश्चित स्थान की ओर चल पड़े। उनके साथ 4 व्यक्ति और भी थे जिनमें वह व्यक्ति भी शामिल था जो मुखबिर बनने से पहले तस्करी करता था। श्री श्रीनिवास निहत्थे थे। 10 नवम्बर, 1991 को सुबह 5 बजे जैसे ही वे और उनके साथी मिलने के पूर्व निश्चित स्थान पर पहुंचे, वीरप्पन ने अपने लेफ्टिनेंट कोलत्ती को गोली मारने का आदेश दिया। सभी उन पर गोलियों की बौछार होने लगी और वे गोलियों के शिकार हो गये। सुबह जब एक खोजी दल वहां से गुजर रहा था तो उन्हें 37 वर्षीय वन अधिकारी का शव अधजली अवस्था में पड़ा मिला और उनका सिर गायब था।

इस कार्रवाई में श्री पडिल्लापल्ली श्रीनिवास ने अपने प्राणों का बलिदान देकर साहस एवं कर्तव्यनिष्ठा का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया।

सं० 21–प्रेज/92—राष्ट्रपति, निम्नलिखित व्यक्तियों को उनके वीरतापूर्ण कार्यों के लिए "शौर्य चक्र प्रदान किए जाने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं:—

1. श्री हजारा सिंह, कपूरथला, पंजाब (मरणोपरान्त)
(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 27 जुलाई, 1990)

27 जुलाई, 1990 को लगभग 1130 बजे जिला जालंधर में पंजाब एण्ड सिंध बैंक की दयालपुर शाखा कार्यालय में वहां के गनमैन ने 8–10 ग्राहकों को बैंक में प्रवेश कराने के लिए जंगलेदार दरवाजा खोला। ग्राहक के भेष में एक लुटेरा उनमें भिड़ गया और उक्त शाखा में रखी नकदी को लूटने के इरादे से उससे बन्दूक छीनने लगा गनमैन हजारा सिंह ने अपने कन्धे और एक बाँह से मजबूती से बन्दूक को पकड़े रखा और दूसरे हाथ के साथ हाथापाई करते हुए उसे पकड़ने के लिए मदद के वास्ते गुहार लगाई। गनमैन के प्रतिरोध से क्रुद्ध होकर दूसरे लुटेरे ने जो बैंक के अन्दर सबसे पहले आने वाले ग्राहकों के साथ चुपके से घुस आया था, और उस समय काउन्टर के सामने ग्राहकों के पीछे खड़ा था, अपनी पिस्तौल निकाल कर गनमैन पर अंधाधुंध गोलियां चला दी। गोलियों की आवाज सुनकर बैंक कर्मचारी और ग्राहक हड़बड़ी में सुरक्षित स्थान की तरफ दौड़े और फर्श पर लेट गए। श्री हजारा सिंह घायल होने के बावजूद लुटेरे को पकड़े रखा और बन्दूक छीनने से उसे रोके रहे। इस हाथापाई के दौरान लुटेरे ने हताश होकर अपनी पिस्तौल निकाल ली और बहुत कम दूरी से श्री हजारा सिंह पर कई गोलियां की बौछार कर उन्हें वहीं ढेर कर दिया। इस मुठभेड़ के परिणाम स्वरूप लुटेरे बैंक से नकदी लूटने और बन्दूक छीनने में विफल रहे और बैंक के बाहर खड़ी मोटर साइकिल पर भाग गए।

इस प्रकार श्री हजारा सिंह ने परम कर्तव्यनिष्ठा चौकसी, और असाधारण साहस का परिचय देते हुए अपने जीवन का बलिदान देकर बैंक लूटने के प्रयास को विफल कर दिया और बैंक के अन्य कर्मचारियों और ग्राहकों का जीवन बचा लिया।

2 13735991–हवलदार मान बहादुर गुरुंग
जम्मू एवं कश्मीर राइफल्स (मरणोपरान्त)
(पुरस्कार की प्रभावी तारीख—28 जुलाई 1990)

19 जम्मू और कश्मीर राइफल्स के हवलदार मान बहादुर गुरुंग अपनी वार्षिक छुट्टी पूरी होने पर "आपरेशन रक्षक फील्ड के संबंध में तैनात अपनी यूनिट में अपना कार्यभार संभालने के लिए 5815 अप गुवाहाटी–वाराणसी एक्सप्रेस से 28 जुलाई 1990 को यात्रा कर रहे थे। धामहरघाट और कमारिया रेल स्टेशनों के बीच सशस्त्र लुटेरों ने ट्रेन रोक दी और मिलिटरी कोच में घुस गए। अपने साथी सैनिकों के साथ मिलकर हवलदार मान बहादुर गुरुंग ने उनका कड़ा विरोध किया। जब लुटेरे हिंसा पर

उतर आए तो हवलदार गुरुंग ने अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना सशस्त्र लुटेरों पर हाथ में पकड़ी गई अपनी खुकरी से बड़ी बहादुरी के साथ हमला किया। 6/5 गोरखा राइफल्स के राइफलमैन गोकुल कुमार गुरुंग और 2/9 गोरखा राइफल के लांस नायक प्रेम बहादुर ने इस हमले में बड़ी कुशलतापूर्वक हवलदार गुरुंग की सहायता की। हाथापाई के दौरान लुटेरों द्वारा बहुत ही नजदीक से चलाई गई गोली से वे मारे गए। बाद में पता चला कि उनकी वीरता और साहसिक कार्रवाई के दौरान एक लुटेरा मारा गया और कई अन्य लुटेरे घायल हो गए जिसके फलस्वरूप जान-माल को और अधिक नुकसान पहुंचाए बिना लुटेरे भाग खड़े हुए।

इस प्रकार हवलदार मान बहादुर गुरुंग ने उत्कृष्ट साहस और अनुकरणीय नागरिक भावना का परिचय दिया और सेना की सर्वोच्च परम्पराओं के अनुरूप अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान कर दिया।

3 5843801—राइफलमैन धन बहादुर छेत्री
2/9 गोरखा राइफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख—28 जुलाई 1990)

28 जुलाई, 1990 को गोहाटी से बनारस की ओर आ रही जी० एल० एक्सप्रेस को डाकुओं ने बिहार में धमाराघाट और कोपारिया के बीच रोक लिया। शीघ्र ही वे प्रत्येक डिब्बे को सुनियोजित ढंग से लूटने लगे। उसी गाड़ी में राइफलमैन धन बहादुर छेत्री और कुछ अन्य जवान अपनी यूनिट में कार्यभार ग्रहण करने के लिए यात्रा कर रहे थे। राइफलमैन धन बहादुर छेत्री और अन्य पांच जवान एक ही डिब्बे में यात्रा कर रहे थे। इन्होंने अपने डिब्बे के दरवाजे बन्द कर लिए और डिब्बे के सिविलियन यात्रियों से कहा कि वे घबराएं नहीं और डिब्बे के फर्श पर लेट जाएं ताकि यदि डाकू गोलियां चलाएं तो वे सुरक्षित रहें। जवानों ने तत्काल डाकुओं से निपटने की योजना बनाई। तदनुसार कुछ जवानों जिनके पास खुकरी थी ने उसे उपयोग के लिए संभाल लिया।

जैसी कि आशा थी डाकू उस डिब्बे में पहुंचे जिसमें यह जवान बैठे हुए थे। डाकुओं ने डिब्बे का दरवाजा खटखटाया और दरवाजा खोलने के लिए यात्रियों को धमकाया। अधीर होकर डाकुओं ने दरवाजे का शीशा तोड़ दिया और अपनी बन्दूकों की नाल डिब्बे में घुसेड़ दी। उसी समय यात्रियों ने डर कर दरवाजा खोल दिया। डिब्बे में घुसने के साथ ही वे यात्रियों का सामान उठाने लगे। कुछ डाकुओं ने दरवाजे के पास बैठे तीन जवानों से नकदी और कीमती वस्तुएं छीनने का प्रयास किया। जवानों के विरोध करने पर मारधाड़ पर उतारू डाकुओं ने तत्काल ही निकट से गोली चलाकर उन्हें मार दिया। राइफलमैन धन बहादुर छेत्री जो डाकुओं को मारने की प्रतीक्षा में थे, डाकुओं द्वारा अचानक गोलियां चला कर की गई अपने साथियों की निर्मम हत्या को सहन नहीं कर सके। अपनी जान की रत्तीभर परवाह किए बिना वे अपनी खुकरी के साथ अपनी रेजीमेंट का युद्ध गीत "आयो गोरखाली" गाते हुए सशस्त्र डाकुओं पर झपट पड़े। सेना के अच्छी तरह से प्रशिक्षित और प्रेरणा के ओत-प्रोत जवान के इस फुर्तीले प्रहार से डाकू अपने को पूरी तरह से असुरक्षित महसूस करने लगे और वे शीघ्र ही वापिस भागने की कोशिश करने लगे। राइफलमैन धन बहादुर छेत्री ने अपनी खुकरी फेंक कर भागते हुए डाकुओं पर प्रहार किया जिससे उनमें एक घायल हो गया पर फिर भी वह भागने में सफल हो गया। उसने अपनी खुकरी फिर उठाई और अपनी जान को जोखिम में डालकर डाकुओं के पीछे भागे और एक अन्य डाकू को घायल कर दिया। उस समय तक राइफलमैन होम बहादुर छेत्री, राम बहादुर थापा इस आक्रमण में उनके साथ आ मिले और यह सुनिश्चित किया कि डाकू अपनी नावों में भाग गए है। इस प्रकार इन तीन जवानों ने पूरी गाड़ी को लूटने से बचा लिया।

राइफलमैन धन बहादुर छेत्री ने अपनी जान को जोखिम में डालकर लुटेरों द्वारा गाड़ी के यात्रियों को लूटने के प्रयास को असफल करने में अनुकरणीय साहस का परिचय दिया।

4. 2872410—हवलदार जगदीश प्रसाद राजपूताना राइफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख—14 अगस्त 1990)

14 अगस्त, 1990 को 9 मध्य प्रदेश बटालियन, राष्ट्रीय कैडेट कोर इंदौर के हवलदार जगदीश प्रसाद पी० एम० बी० गुजराती साइंस कालेज इंदौर के कैडेटों को सामान्य प्रशिक्षण देने के बाद अपनी साइकिल पर यूनिट आवास लौट रहे थे। लगभग सवा ग्यारह बजे जब वे सैन्ट्रल बैंक आफ इंडिया सयोगितागंज शाखा इंदौर के निकट पहुंचे तब उन्होंने कुछ शरारती तत्वों द्वारा घायल एक औरत और एक आदमी को सहायता के लिए पुकारते हुए सुना। वे जिस ओर इशारा कर रहे थे उसी दिशा में उन्होंने दो युवकों को भागते हुए भी देखा। ये सुरन्त ही एक छोटे रास्ते से लपके और बदमाशों के पास पहुंच गए। दोनों बदमाशों के पास पहुंच कर इन्होंने देखा कि उन दोनों की उम्र लगभग तीस वर्ष की थी और उनके हाथ में चाकू थे जिन पर खून के ताजे निशान थे। हवलदार प्रसाद ने यह भी देखा कि उनमें से एक व्यक्ति ने हाथ में एक थैला पकड़ा हुआ है जिसमें छीनी हुई धन राशि है। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिंता किए बगैर हवलदार जगदीश प्रसाद दोनों अपराधियों पर झपट पड़े और उनके बीच काफी समय तक कड़ा संघर्ष हुआ। ये अकेले निहत्थे ही दो सशस्त्र व्यक्तियों से जूझते रहे जिसमें से एक ने अपने चाकू से इन पर वार भी किया। इस प्रक्रिया में एक बदमाश भाग निकला जबकि दूसरे पर हवलदार जगदीश प्रसाद काबू पाए रहे। इसी व्यक्ति के पास वह थैला भी था जिसमें 30,000/- रुपये थे। बाद में पकड़े गए बदमाश और उक्त थैले को स्थानीय पुलिस प्राधिकारियों को सौंप दिया गया।

इस प्रकार हवलदार जगदीश प्रसाद ने डकैतों को पकड़ने में उत्कृष्ट वीरता और अनुकरणीय नागरिक भावना का परिचय दिया।

5 श्री सुदर्शन कुमार (मरणोपरांत)
अमृतसर पंजाब।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख—24 अगस्त, 1990)

24 अगस्त, 1990 को जब श्री सुदर्शन कुमार अपनी धान मिल में आए तो ए० के०-47 राइफलों से लैस दो आतंकवादियों ने उन्हें धक्का देकर मिल के मुख्य द्वार से अन्दर धकेल दिया। आतंकवादियों को देख वहां खड़े अन्य सभी व्यक्ति दुम दबाकर भाग गए। श्री सुदर्शन कुमार ने आतंकवादियों को समझाने-बुझाने की कोशिश की परन्तु यह समझते हुए कि आतंकवादी उन्हें गोली मारकर खत्म करने पर उतारू है, वे उनमें से एक आतंकवादी पर झपट पड़े और उसे जकड़कर दूसरे आतंकवादी के सामने कवच के रूप में उसका इस्तेमाल करने लगे। उत्कृष्ट सूझबूझ का परिचय देते हुए श्री सुदर्शन कुमार ने अपनी अंगुलियों से ट्रिगर दबाकर राइफल की सारी गोलियां बेकार कर दी। दूसरे आतंकवादी द्वारा दागी गई सभी गोलियां उसके साथी को लगी और उसकी घटना स्थल पर ही मृत्यु हो गई। श्री सुदर्शन कुमार तब तक सुरक्षित रहे जब तक बाहर इंतजार कर रहे अन्य दो आतंकवादी अपने साथी की मदद के लिए पुकार सुनकर दीवार फांदकर अन्दर न आ गए। निहत्थे होने के बावजूद श्री सुदर्शन कुमार विभिन्न दिशाओं में उन पर गोलीबारी कर रहे तीन आतंकवादियों का तब तक बहादुरी से मुकाबला करते रहे जब तक कि नजदीक से उनके सिर पर गोली लगने से उनकी मृत्यु न हो गई।

इस प्रकार श्री सुदर्शन कुमार ने आतंकवादियों का मुकाबला करते हुए असाधारण वीरता और अनुकरणीय साहस का परिचय दिया और इस कार्रवाई में उन्होंने अपने प्राणों का सर्वोच्च बलिदान कर दिया।

6. 8030794—पाइनियर (सामान्य ड्यूटी) जुगराज सिंह मीणा
(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख—4 सितम्बर, 1990)

1563 पाइनियर कंपनी (सेना) के जुगराज सिंह मीणा को सीमा सड़क संगठन की बीकन परियोजना की 56 सड़क निर्माण कंपनी के साथ सशस्त्र मार्ग रक्षी/गार्ड के रूप में तैनात किया गया था।

4 सितम्बर, 1990 को उन्हें 369 रोड मेनटेनेन्स प्लाटून केयर, 56 सड़क निर्माण कंपनी के प्लाटून कमांडर एम० बालकृष्ण कुरुप, महायक इंजीनियर (सिविल), जो कि बरास्ता मनासबल कोईल बाईपास पर निर्माण कार्यों का निरीक्षण करने के लिए जा रहे थे, के मार्गरक्षी के रूप में भेजा गया था। ये सभी एक जोंगा में जा रहे थे जिसे 1582 पाइनियर कंपनी के पाइनियर राजेन्द्रन चला रहे थे। श्रीनगर की मनासबल झील के निकट उग्रवादियो ने उनके वाहन पर घात लगाकर हमला कर दिया। वाहन के पूर्णत. रुक पाने से पूर्व ही पाइनियर जुगराज सिंह मीणा उस पर कूद पड़े और उन्होंने मोर्चा लेकर अकेले ही उग्रवादियों का मुकाबला करना शुरू कर दिया हालांकि उग्रवादी सभी प्रकार से उनसे अधिक शक्तिशाली थे। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए पाइनियर जुगराज सिंह मीणा मोर्चे पर डटे रहे और वे तब तक उग्रवादियों का मुकाबला करते रहे जब तक उग्रवादियों की गोलियों से उनका शरीर छलनी नहीं हो गया। उनके अफसर ड्राइवर और स्वयं उनकी घटना स्थल पर ही मृत्यु हो गई।

इस प्रकार पाइनियर जुगराज सिंह मीणा ने अपने जीवन और सुरक्षा की चिंता किए बगैर उन्हें सौंपे गए सरकारी कार्य को करते समय उग्रवादियों से हुई मुठभेड़ में अनुकरणीय साहस और दृढ़ निश्चय का परिचय दिया।

7. श्री जमन सिंह रावत (मरणोपरांत)
देहरादून, उत्तर प्रदेश।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख—15 सितम्बर 1990)

15 सितम्बर, 1990 को प्रातः 11.00 बजे पिस्तौलों और ए के—47 असाल्ट राइफलों से लैस 03 व्यक्ति स्टेट बैंक आफ पटियाला की देहरादून हरिद्वार रोड स्थित शाखा में पहुंचे। उन में से एक बैंक में घुस गया और बैंक से नकदी लूटने के इरादे से शाखा प्रबन्धक के कमरे की ओर बढ़ा। उस समय ड्यूटी पर तैनात सशस्त्र गार्ड श्री जमन सिंह रावत ने संकट भांपकर अन्दर घुसे हुए व्यक्ति को ललकारा। इस पर उक्त व्यक्ति ने श्री रावत पर पिस्तौल से दो गोलियां दाग दी। बुरी तरह से घायल होने के बावजूद श्री रावत ने अपनी सर्विस गन से गोली चलाकर उसे घायल कर दिया, डकैती के प्रयास को विफल होते देख दो अन्य डकैतों ने अपनी ए के—47 असाल्ट राइफलों से अंधाधुंध गोलियां चलानी शुरू कर दी। इस कार्रवाई में श्री रावत और बैंक में आए 3 नागरिकों की तत्काल मृत्यु हो गई और अन्य 11 व्यक्ति घायल हो गए।

इस प्रकार श्री जमन सिंह रावत ने अपने प्राणों की आहुति देकर डकैती के प्रयास को विफल करने में अनुकरणीय साहस, उत्कृष्ट सूझबूझ और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

8. 13748993—राइफलमैन दलीप सिंह, (मरणोपरांत)
जम्मू तथा कश्मीर राइफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख—19 अक्तूबर, 1990)

19 अक्तूबर, 1990 को राइफलमैन दलीप सिंह अपने गांव फूल प्यारा, तहसील पठानकोट, जिला गुरदासपुर (पंजाब) जा रहे थे। अचानक कुछ अन्य गांववासियों के साथ उन्हें फूल प्यारा गांव के बाहरी इलाके में घात लगाए बैठे चार सशस्त्र आतंकवादियों ने घेर लिया। राइफलमैन दलीप सिंह फुर्ती के साथ निहत्थे ही दुर्दमनीय उत्साह और कौशल से उनके घेरे को तोड़ने के लिए दौड़े। उन्होंने एक आतंकवादी को पकड़ लिया और उससे हथियार छीनने और उसका हथियार छीनकर आतंकवादियों को मारने के उद्देश्य से वे उससे भिड़ गए। इस अचानक हमले से आतंकवादी घबरा गए और आतंकवादियों का ध्यान बंट जाने से फंसे हुए गांव के अन्य लोगों को भागने का मौका मिल गया। राइफल मैन दलीप सिंह को आतंकवादियों की कई गोलियां लगी परन्तु घटना-स्थल पर ही मृत्यु होने तक वे अकेले ही आतंकवादियों से जूझते रहे। उन्होंने भारतीय सेना की परम्पराओं का सही मायनों में अनुसरण करते हुए उत्कृष्ट साहस का परिचय दिया।

इस प्रकार राइफलमैन दलीप सिंह ने अपनी जान पर खेल कर कई निर्दोष लोगों की जान बचाने में अनुकरणीय साहस व परिचय दिया।

9. आई०सी०—44017 एन० कैप्टन किशोर गौर बाबा
(पुरस्कार की प्रभावी तारीख—20 अक्तूबर, 1990)

सीमा सड़क संगठन की बीकन परियोजना की 333 सरफेसिंग प्लाटून केयर 53 सड़क निर्माण कंपनी के प्रभारी अधिकारी कैप्टन किशोर गौर बाबा को, अप्रैल 90 से नवम्बर, 1990 तक की अवधि के दौरान सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण राष्ट्रीय राजमार्ग 1ए—श्रीनगर—बारामूला—उड़ी मार्ग—के रख-रखाव, सुधार और सुदृढ़ करने का काम सौंपा गया था।

आतंकवादियों से अत्याधिक प्रभावित इस क्षेत्र में बिना किसी कठिनाई के अपने कार्मिकों और मशीनरी को सड़क पर काम पर लगाना मुश्किल था। सीमा सड़क संगठन के कार्मिकों के शिविरों, निर्माण-कार्य स्थलों और उनके वाहनों/कानवायों पर आतंकवादियों द्वारा हमलाकर दिए जाने के परिणामस्वरूप समस्या और भी बढ़ गई। सीमा सड़क संगठन के कार्मिकों का बचा-खुचा हौसला उस समय और भी पस्त हो गया जब इस क्षेत्र में आतंकवादियों के हाथों संगठन के कतिपय कार्मिकों को अपने बहुमूल्य जीवन से हाथ धोना पड़ा। ऐसी परिस्थितियों में अपने कार्य के महत्व को समझते हुए कैप्टन के० जी० बाबा ने अपनी सुरक्षा और आराम की परवाह किए बिना दृढ़ निश्चय और समर्पण भावना से दुष्कर एवं विषम परिस्थितियो में अत्यधिक सूझबूझ के साथ योजना बनाई तथा अपने संसाधनों का सुव्यवस्थित एवं गतिशील ढंग से कुशलतापूर्वक उपयोग किया। आतंकवादियों द्वारा इन पर किए गए कतिपय प्राणघातक हमलों के बावजूद ये हमेशा काम पर अपने कार्मिकों के साथ डटे रहते। ये अदम्य साहस तथा दृढ़ संकल्प के साथ सड़क पक्की करने, स्थायी निर्माण-कार्य करने तथा दक्षता एवं कुशलतापूर्वक सड़क के रख-रखाव का काम करते रहे ताकि सड़क पर सैनिको और वाहनों के आने-जाने में कोई अड़चन न आए।

जुलाई, 1990 में कैप्टन के० जी० बाबा को विमानन बेस शरीफाबाद के निर्माण का अतिरिक्त कार्य सौंपा गया। यह सामरिक महत्व का कार्य नवम्बर, 1990 तक पूरा किया जाना था। इन्हें और इनके कार्मिकों को प्रतिकूल परिस्थितियों में बिना किसी सुरक्षा प्रदान किए तैनात किया गया था। परन्तु इसके बावजूद इन्होंने इस कार्य को करने का बीड़ा उठाया। इसके लिए उन्होंने अपने कार्मिको को संगठित किया, उसके लिए सामान जुटाया और फिर उसे निर्धारित समय में पूरा करने के लिए व्यवसायिक कुशलता और दृढ़ निश्चय के साथ कार्य शुरू कर दिया।

20 अक्तूबर, 1990 को जब कैप्टन के० जी० बाबा क्षतिग्रस्त के समय सड़क बनाने के काम में इस्तेमाल किए जाने वाले मार्शल प्लेट के लिए अतिरिक्त हिस्से-पुर्जे लेकर लौट रहे थे तो ये जम्मू श्रीनगर वाहय पथ पर घात लगाकर किए गए भीषण हमले की चपेट में आ गए। इससे काफिले में शामिल वाहनो में सवार कार्मिक भयभीत हो गए। अपने वाहन पर भीषण गोलाबारी होने के बावजूद कैप्टन बाबा ने धैर्य से काम लिया और अपने काफिले को कुशलतापूर्वक गोलाबारी के हमले से बचा लिया। इसके अनुकरणीय धैर्य, अदम्य साहस, दृढ़ संकल्प और कर्तव्यनिष्ठा से प्रेरित होकर इनके साथ कर्मचारी प्रतिकूल परिस्थितियों में निडर होकर काम करने में लग गए और इन्होंने सामरिक महत्व का यह कार्य रिकार्ड समय में पूरा कर दिखाया।

इस प्रकार कैप्टन किशोर गोर बात्रा ने कार्मिक प्रबन्ध, तकनीकी कौशल, व्यावसायिक कुशलता, वीरता एवं असाधारण तथा प्रशासनीय कार्य-क्षमता का परिचय दिया ।

10 जी/164243-एफ पाइनियर बेहरा राम (मरणोपरांत)
(पुरस्कार की प्रभावी तारीख—10 दिसम्बर, 1990)

1611 पाइनियर कम्पनी के पाइनियर बेहरा राम को सीमा सड़क संगठन की हिमांक परियोजना की 113 सड़क निर्माण कम्पनी के साथ तैनात किया गया था और उन्हें लेह-चालुंका सड़क से बर्फ हटाने के कार्य पर लगाया गया था ।

लेह-चालुका सड़क सामरिक महत्व की सड़क है और सियाचिन ग्लेशियर पर आखुंगला दर्रे के उत्तर की ओर तैनात की गई टुकड़ियों के लिए तो यह मार्ग अति महत्वपूर्ण है । 14000 फुट से लेकर 18380 फुट की ऊंचाई पर स्थित यह मार्ग विश्व का सर्वाधिक ऊंचाई वाला मोटर मार्ग है । सर्दी के मौसम में इस क्षेत्र का तापमान शून्य से 30 डिग्री सेल्सियस नीचे तक पहुंच जाता है । यहां पर प्राय: हर रोज बर्फ के तेज तूफान आते हैं और हिमस्खलन होते रहते हैं । मौसम की इन प्रतिकूल परिस्थितियों में पाइनियर बेहरा राम को 15 नवम्बर, 1990 से सड़क पर से बर्फ हटाने के कार्य के लिए डोजर चालक को रास्ता दिखाने के लिए हैल्पर के रूप में तैनात किया गया था ।

इस क्षेत्र में 9 और 10 दिसम्बर, 1990 की रात में भारी बर्फ पड़ी और सड़क पर लगभग 5 मीटर बर्फ जम गई । पाइनियर बेहरा राम और पाइनियर राजेन्द्र राम को सड़क पर से बर्फ हटाने के काम में डोजर चालक थंगाराजन की सहायता करने का आदेश दिया गया क्योंकि सेना की एक कान्वाय आवश्यक संक्रियात्मक सामान लेकर खारदुंगला दर्रे के उत्तर की ओर जाना था । इस दल ने अपने जीवन के खतरे की परवाह न करते हुए प्रातः 6 बजे जबकि अंधेरा छाया हुआ था अपना कार्य शुरू कर दिया । बहुत कम दिखाई पड़ने और हिमस्खलन के संभावित खतरे को देखते हुए उन्हें सौंपा गया कार्य बहुत ही जोखिमपूर्ण था । जब दोनों कार्मिक सुबह 9 बजे के लगभग डोजर चालक की सहायता कार्य में लगे हुए थे तभी हिमस्खलन हुआ और पाइनियर राजेन्द्र राम आंशिक रूप से बर्फ में दब गए । पाइनियर बेहरा राम ने पाइनियर राजेन्द्र राम की सहायता कर उन्हें बर्फ से बाहर निकाला । हालांकि पुनः हिमस्खलन की संभावना बनी हुई थी परन्तु फिर भी संभावित खतरे की पूरी जानकारी होने के बावजूद यह दल बर्फ हटाने का कार्य करता रहा । लगभग पांच मिनट के बाद ही दुबारा हिमस्खलन हुआ और पाइनियर राजेन्द्र राम एक बार फिर सीने तक बर्फ में दब गए । पाइनियर बेहरा राम जोकि तब तक पुल तक पहुंच गए थे, वापिस पाइनियर राजेन्द्र राम की सहायता को दौड़ पड़े परन्तु उनके वहां तक पहुंचने से पूर्व ही पुनः भीषण हिमस्खलन हुआ और गिरते हुए हिमखण्डों के साथ वे दोनों ही घाटी में गिर गए । हिमखंडों की चोट और बर्फ में दब जाने से उनकी मृत्यु हो गई ।

इस प्रकार, पाइनियर बेहरा राम ने अपने प्राणों की आहुति देकर उच्चकोटि की कर्तव्यपरायणता और वीरता का परिचय दिया ।

11 कैप्टन हरेन्द्र सिंह
(आई० सी०—47454),
9 गोरखा राइफल्स
(पुरस्कार की प्रभावी तारीख—14 जनवरी, 1991)

कैप्टन हरेन्द्र सिंह असम के यूनाइटेड लिबरेशन फ्रंट के दुर्दान्त आतंकवादी को पकड़ने के बाद यूनिट आवास को लौट रहे थे । लौटते समय इन्होंने विपरीत दिशा से तेज गति से आ रही यामाहा मोटरसाइकिल पर सवार तीन व्यक्तियों को देखा । इनके आगे चल रही कार ने इन्हें रुकने के लिए सिगनल दिया अपनी मोटरसाइकिल की गति कम करने के बजाय उन्होंने प्रयास करके उसे तीव्र गति से इस कार से आगे निकाल लिया । इस कार के पीछे एक अन्य कार में यात्रा कर रहे कैप्टन हरेन्द्र सिंह ने यह दृश्य देखा । इन्होंने मोटर साइकिल पर भाग रहे व्यक्तियों को पकड़ने के लिए तुरन्त कार का दरवाजा खोला जब ये मोटरसाइकिल सवार इनकी कार के पास पहुंचे तो इन्होंने मोटरसाइकिल की पिछली सीट पर बैठे व्यक्ति के कंधे पर हथियार लटका हुआ देखा, जिसको उसने अपने कोट में ढक रखा था । इन्होंने अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना मोटरसाइकिल पर भाग रहे व्यक्तियों के ऊपर कूद कर पीछे की सीट पर बैठे एक व्यक्ति को पकड़ लिया जिसके पास एम० 22 असाल्ट राइफल थी, फुर्ती के साथ की गई इस कार्रवाई से मोटर साइकिल सवार अपना नियंत्रण खोकर लुढ़क पड़े । इन आतंकवादियों में से एक ने तुरन्त इनकी कार की आड़ ली और अपनी पिस्तौल से गोली चलाने लगा । इस आतंकवादी ने कैप्टन हरेन्द्र सिंह से भिड़ रहे अपने साथी को हथगोला फेंकने का आदेश भी दिया । हमारे सैनिकों ने फौरन जवाबी गोलाबारी की जिससे एक आतंकवादी घायल हो गया और तीसरा आतंकवादी जिसने गोली चलाई थी, पास में घने जंगल में भाग गया । कैप्टन हरेन्द्र सिंह से भिड़ रहे आतंकवादी के दाहिने हाथ में उच्च-विस्फोट 36 प्राइमिम हथगोला और बाएं हाथ में कारतूस से भरी एम 22 असाल्ट राइफल थी । यह आतंकवादी असाल्ट राइफल की नाल से कैप्टन हरेन्द्र सिंह पर प्रहार कर रहा था ताकि यह स्वयं को छुड़ाकर हथगोला फेंक सके और घातक हथियार का इस्तेमाल कर सके परन्तु घायल होने के बावजूद कैप्टन हरेन्द्र सिंह ने उसे पूरी ताकत से जकड़ रखा । इसके पश्चात् इनके दल के अन्य सदस्यों ने मिलकर इस आतंकवादी को दबोच लिया इस कार्रवाई में इस आतंकवादी से एक एम . 22 असाल्ट राइफल और एक उच्च विस्फोट-36 प्राइमिम हथगोला बरामद किया गया ।

इस प्रकार कैप्टन हरेन्द्र सिंह ने आतंकवादियों का मुकाबला करते हुए धैर्य, साहस एवं उच्चकोटि के असाधारण नेतृत्व का परिचय दिया ।

12. सैकिण्ड लैफ्टिनेंट प्रियदर्शी चौधरी
(आई० सी०-49481) 11 सिख

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख—19 जनवरी 1991)

सैकण्ड लेफ्टिनेंट प्रियदर्शी चौधरी संक्रिया रक्षक क्षेत्र में पंजाब में तैनात 11 सिख की एक यूनिट के आसूचना और निगरानी अफसर थे । 19 जनवरी 1991 को लगभग 1600 बजे इनकी यूनिट को फिरोजपुर जिले के सिहलके गांव के पास एक क्षेत्र की घेराबन्दी करके उसकी तलाशी लेने का आदेश दिया गया था जहां एक-97 राइफलों, सैल्फ लोडिंग राइफलों और राकेट लांचरों जैसे घातक हथियारों से लैस 9 आतंकवादियों का एक दल मोर्चा संभाले हुए था । इनमें से चार आतंकवादियों ने एक फार्म हाउस में जबर्दस्ती कब्जा करके गहरी खाई में मोर्चा संभाला हुआ था तथा शेष पांच आतंकवादी सफेदे के घने पेड़ों में छिपे हुए थे । "ए" कंपनी फार्म हाउस के दक्षिण में और "बी" कंपनी उसके पश्चिम में थी जहां से आतंकवादी कारगर ढंग से गोलीबारी कर रहे थे । सैकिण्ड लैफ्टिनेंट प्रियदर्शी चौधरी ने "ए" कंपनी में पहुंच कर यह पाया कि सीमा सुरक्षा बल का एक जवान उग्रवादियों की प्रभावी गोलीबारी की चपेट में आ गया है । यह नौजवान अफसर भीषण गोलीबारी के बीच आगे बढ़े और सीमा सुरक्षा बल के जवान को कुशलतापूर्वक वहां से सुरक्षित स्थान पर ले आए । उसके बाद ये "बी" कंपनी के प्लाटून नं० 6 की तरफ बढ़े जिसे फार्म हाउस को मुक्त कराने का काम सौंपा गया था । यह पता लगाने के बाद कि राकेट लांचर नं० 1 से छोड़े गए दो राकेटों में से केवल एक राकेट ही प्रहार कर सका सैकिण्ड लैफ्टिनेंट प्रियदर्शी चौधरी राकेट लांचर नं० 1 को लेकर फार्म हाउस के निकट पहुंच गए और 84 एम एम राकेटों से तीन बार प्रहार किया जिससे उन्हें शत-प्रतिशत सफलता मिली । अब अंधेरा होने लगा था । सैकिण्ड लेफ्टिनेंट प्रियदर्शी चौधरी प्लाटून नं० 6 के सैनिकों को लेकर फार्म हाउस के निकट पहुंच गए तथा इन्होंने उसकी छत पर चढ़कर हथगोला फेंके । उसके बाद अपनी सुरक्षा की तनिक भी परवाह

किए बिना ये तीव्र गति से छत से कूद पड़े और ठोकर मार कर उस कमरे के दरवाजे को खोल दिया जहां से सुदृढ़ मोर्चा संभाले दो आतंकवादी गोलियां बरसा रहे थे। दरवाजा खुलते ही इन्होंने एक और हथगोला फैंका और उस हथगोले के फटने के साथ ही अपनी कारबाइन से गोलियां बरसाते हुए कमरे में प्रवेश करके इन्होंने तीन आतंकवादियों को मौत के घाट उतार दिया।

इस प्रकार सैकिण्ड लेफ्टिनेन्ट प्रियदर्शी चौधरी ने आतंकवादियों का मुकाबला करते हुए अदम्य साहस और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

13 जी/110082—डब्ल्यू आपरेटर एक्सकेवेटिंग मशीनरी जगदीश राज

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख—20 जनवरी 1991)

सीमा सड़क संगठन की परियोजना हिमांक के लिए तैनात की गई 113 सड़क निर्माण कंपनी की 359 सड़क रखरखाव प्लाटून के आपरेटर एक्सकेवेटिंग मशीनरी जगदीश राज को लेह-चालुका सड़क से डोजर से बर्फ हटाने का कार्य सौंपा गया था।

विश्व का यह सबसे अधिक ऊंचाई वाला मोटर मार्ग है जो 18380 फीट की ऊंचाई पर है। यह खारदुंगला दर्रे से होकर गुजरता है और यहां का न्यूनतम तापमान शून्य से 30 से लेकर 40 डिग्री सेंटिग्रेड तक कम हो जाता है। विशेष रूप से 25 से 72 मि० मी० के बीच के मार्ग पर अकसर भूस्खलन और हिमस्खलन होता रहता है। 113 सड़क निर्माण कम्पनी को इस मार्ग को वाहनों के आने जाने के लिए चालू हालत में रखने का कार्य सौंपा गया है ताकि सियाचिन ग्लेशियर में तैनात हमारे जवानों को निर्बाध रूप से सम्भारिकी सहायता उपलब्ध कराना सुनिश्चित किया जा सके।

आपरेटर एक्सकेवेटिंग मशीनरी जगदीश राज को वर्ष 1988-89, 1989-90 और 1990-91 में शीतकाल में कि० मी० 43 और खारदुंगला दर्रे के बीच मार्ग से बर्फ हटाने का दायित्व सौंपा गया था। 1988-89 में शीत ऋतु में हुए एक हिमस्खलन में ये अपने डोजर के साथ बर्फ में दब गए थे। घायल हो जाने के बावजूद इन्होंने स्वयं को बाहर निकाला। हालांकि पुनः बर्फ में दब जाने का खतरा बना हुआ था परन्तु उसकी परवाह न करते हुए घायल अवस्था में भी ये अपने काम में लगे रहे। इन्हें काफी चोट आई थी इसलिए बाद में इन्हें चंडीगढ़ स्थित कमान अस्पताल में भेज दिया गया। चोट लगने के बावजूद आपरेटर एक्सकेवेटिंग मशीनरी जगदीश राज ने फिर वर्ष 1989-90 की शीत ऋतु में बर्फ हटाने के कार्य के लिए स्वयं को प्रस्तुत किया। असाधारण साहस और निष्ठापूर्वक कार्य करते हुए इन्होंने सड़क को वर्ष भर यातायात के लिए खुला रखा। वर्ष 1990 में इनकी दाईं आंख में खराबी आ गई थी परन्तु इसके बावजूद इन्होंने एक बार फिर स्वेच्छापूर्वक वर्ष 1990-91 की शीत ऋतु में मार्ग से बर्फ हटाने के कार्य का बीड़ा उठाया। इनके कमान अधिकारी ने इन्हें बर्फ हटाने का कार्य न करने की सलाह दी परन्तु ये अपने निर्णय पर अडिग रहे और इस कार्य के लिए फिर तैयार हो गए। इन्हें नवम्बर 1990 में पुनः 43 कि० मी० और खारदुंगला दर्रे के बीच बर्फ हटाने के कार्य के लिए तैनात किया गया। अपनी दाईं आंख में लगी चोट और अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की तनिक भी चिंता किए बिना शून्य से भी कम तापमान में भारी हिमस्खलनों और हिमस्खलनों के जोखिम के बीच वे लगातार तीन माह तक बर्फ हटाने का कार्य करते रहे और सड़क को यातायात के लिए पूरे वर्ष खुला रखा। 20 जनवरी 1991 को उनकी दाईं आंख की स्थिति और अधिक बिगड़ गई तथा इन्हें जबरदस्ती लेह के जनरल अस्पताल में भेज दिया गया। बाद में चंडीगढ़ के कमान अस्पताल में दाईं आंख आपरेशन करके निकालनी पड़ी।

इस प्रकार आपरेटर एक्सकेवेटिंग मशीनरी जगदीश राज ने काफी लम्बे समय तक दृढ़ संकल्प, उच्चकोटि की कर्त्तव्यपरायणता और साहस का परिचय दिया। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा और आराम की तनिक भी परवाह न करते हुए इन्होंने अत्यधिक कठिन क्षेत्र में बर्फ हटाने का कार्य किया और साहस एवं कर्त्तव्यनिष्ठा का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया।

14. कैप्टन चिमबंडा मछेया थिमन्ना (आई० सी०-49398) आर्टिलरी (पुरस्कार की प्रभावी तारीख—9 मार्च 1991)

कैप्टन थिमबंडा मछेया थिमन्ना को असम के मंगलदाई क्षेत्र में यूनाईटेड लिबरेशन फ्रंट के उग्रवादियों की गतिविधियों पर काबू पाने का काम सौंपा गया था। इस क्षेत्र में ये उग्रवादी स्थानीय व्यापारियों और चाय के व्यापारियों से धन छीनने में लगे हुए थे। कैप्टन थिमन्ना को इस क्षेत्र में पिस्तौल की नोक पर पैसा छीनने वाले दो व्यक्तियों श्री स्वराज कुमार डेका और श्री अरूप बरूआ को गिरफ्तार करना था। यह सूचना मिलने पर कि श्री स्वराज डेका होटल एलोरा में रात्री का भोजन कर रहें हैं कैप्टन थिमन्ना होटल में पहुंच गए। होटल के अन्दर बहुत हल्की रोशनी होने के कारण काफी अंधेरा था। उन्होंने फोटोग्राफों के आधार पर श्री स्वराज डेका को पहचाना और उसे ललकारा। इस पर स्वराज डेका ने इन्हें मारने के उद्देश्य से एक छुरा निकाल कर इन पर हमला कर दिया। कैप्टन थिमन्ना ने फुर्ती से स्वराज डेका पर छलांग लगाई और पूरी ताकत के साथ छुरे को छीनकर होटल से बाहर फेंक दिया। तब दोनों के बीच बिना हथियार के 15 मिनट तक भीषण लड़ाई हुई। कैप्टन थिमन्ना ने स्वराज डेका को जमीन पर पटक दिया और उसकी छाती पर बैठ गए। अब उसके पास इस साहसी और बलशाली अफसर के सामने आत्मसमर्पण करने के अतिरिक्त और कोई विकल्प नहीं था। अतः स्वराज डेका ने हाथ उठाकर अपने आत्मसमर्पण की घोषणा की। स्वराज डेका से पूछ-ताछ करने पर अरूप बरूआ को गिरफ्तार करने का सुराग मिला। उस क्षेत्र के लोग अरूप बरूआ की गतिविधियों से बहुत ज्यादा भयभीत थे। अतः कैप्टन थिमन्ना ने दिन-रात उसके घर की निगरानी शुरू कर दी। 9 मार्च 1991 को यह सूचना पाकर कि अरूप बरूआ घर आया हुआ है कैप्टन थिमन्ना ने उसके घर को चारों ओर से घेर लिया और दरवाजा तोड़कर अन्दर घुस गए। इस पर अरूप बरूआ खिड़की से बाहर कूद गया और रात के अंधेरे का लाभ उठाते हुए भाग निकलने की कोशिश करने लगा। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए कैप्टन थिमन्ना ने उसी खिड़की से कूद कर अरूप बरूआ का पीछा करना शुरू कर दिया। इसके बाद दोनों में काफी संघर्ष हुआ जिसमें कैप्टन थिमन्ना थोड़े जख्मी भी हो गए। 10 मिनट की हाथापाई के बाद इन्होंने अरूप बरूआ को पूरी तरह काबू में कर लिया।

इस प्रकार कैप्टन चिमबंडा मछैया थिमन्ना ने दो दुर्दान्त आतंकवादियों को गिरफ्तार करने में उत्कृष्ट साहस का परिचय दिया।

15 2770106—हवलदार लिम्बक दादा निमसे, मराठा लाईट इन्फैंट्री (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख—19 मार्च, 1991)

26 मराठा लाइट इन्फैंट्री की "बी" कम्पनी के एक दल को 19 मार्च, 1991 को एक संदिग्ध विद्रोही को गिरफ्तार करने के लिए असम में तैनात भेजा गया। वहां एक आतंकवादी के छुपे होने की आशंका थी। हवलदार लिम्बक दादा निमसे दल के स्काउट कमांडर थे। घर का पता लगने पर हवलदार निमसे रेंगते हुए घर के पास पहुंच गए और घर की मजबूती के साथ घेराबंदी कर दी। उन्होंने यह कार्रवाई बिना किसी आहट के इतनी तेजी के साथ की कि असम के यूनाइटेड लिबरेशन फ्रंट के खतरनाक आतंकवादी अमृत राभा को अपनी झोंपड़ी के बाहर हो रही कार्रवाई की तनिक भी भनक नहीं लगी। गश्तीदल में शामिल सूबेदार यशवन्त राव महादिक ने दरवाजा खटखटाया। आतंकवादी ने खिड़की से बाहर कूद कर एक "डाह" उठा लिया और हवलदार लिम्बक दादा निमसे की ओर दौड़ा, हवलदार निमसे ने तत्काल आतंकवादी के साथ द्वन्द्व युद्ध कर दिया। उन्होंने जल्दी ही आतंकवादी को पूरी तरह काबू में कर लिया। तलाशी लेने पर उसके पास से 20,550 रुपये बरामद हुए। उससे गहन पूछताछ किए जाने पर उसने संगठन के बारे में महत्वपूर्ण सूचना दी और उसने असम यूनाइटेड लिबरेशन फ्रंट की दो महिला आतंकवादियों को पकड़वाया। उसने हाटी गांव में असम यूनाइटेड

लिब्रेशन फ्रंट के 25 आतंकवादियो के होने के बारे मे भी सूचना दी। इस पर तीन अफसरों, एक जूनियर कमीशन अफसर और 30 अन्य रैंकों का एक दल तत्काल उक्त गांव मे पहुंचा। वाहन के गांव के पास पहुंचते ही नौजवान व्यक्तियो का एक दल वहां से भागने लगा। सैनिकों के दल ने वाहन से उतर कर दो दिशाओं मे आतंकवादियों का पीछा करना शुरू कर दिया। इस बार भी हवलदार निमसे सबसे आगे थे। भागता हुआ एक आतंकवादी बचने के लिए नाले के अन्दर कूद गया। हवलदार निमसे भी आतंकवादी के पीछे कूद गए। चारों ओर से घिरा हुआ पा कर आतंकवादी हवलदार निमसे से भिड़ गया। हवलदार निमसे 12 घंटे की लगातार संक्रियात्मक कार्रवाई के फलस्वरूप बुरी तरह थके हुए थे। लगभग दो मिनट तक दोनों के बीच हाथापाई होती रही और उसके बाद वे दोनों पानी में डूब गए। अंधेरा बढ़ता जा रहा था और दोनो में से कोई भी दिखाई नही दे रहा था। अच्छी तरह से खोजबीन करने के बाद अगले दिन उसी स्थान से दो शव बरामद हुए जहां उन दोनों को अंतिम बार हाथापाई करते हुए देखा गया था।

इस प्रकार हवलदार त्रिम्बक दादा निमसे ने अदम्य साहस और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया तथा सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप अपने प्राणों का बलिदान कर दिया।

16. 2779648—सिपाही सुधाकर धुले,
6 मराठा लाईट इन्फैंट्री (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख—30 मार्च, 1991)

30 मार्च, 1991 को 6 मराठा लाईट इन्फैंट्री औरंगाबाद जिले के सुनूर कालीपुर और रजवानशेर गांवों की घेराबंदी करने और उनकी तलाशी लेने के लिए भेजी गयी। सिपाही सुधाकर धुले 10 प्लाटून डेल्टा कंपनी के लाईट मशीन गनर नं० 2 थे और उन्हे गांव सुनूर कालीपुर की घेराबंदी के लिए तैनात किया गया था। सिपाही सुधाकर धुले और लाईट मशीन गनर नं० 1 सिपाही निवृत्ति कोतवाल गांव के उत्तरी मार्ग की चौकसी कर रहे थे। सुनूर कालीपुर गांव और उसके आस-पास के क्षेत्र में बड़ी संख्या में राष्ट्रविरोधी तत्वों की मौजूदगी से वहां स्थिति अत्यधिक तनावपूर्ण थी। गांव से भागने के निष्फल प्रयास में राष्ट्रविरोधी तत्वों ने भारी मात्रा में गोली बारी की और घेराबंदी को तोड़ कर वहां से भागने का प्रयास किया। सिपाही सुधाकर धुले राष्ट्रविरोधी तत्वों की गोलीबारी मे घायल हो गए फिर भी वे भाग रहे राष्ट्रद्रोही तत्वों पर झपट पड़े और उन्होंने उनमें से एक व्यक्ति को वही मार गिराया। उसी समय अन्य व्यक्ति तेजी से मुड़े और मकानों की आड़ मे सुरक्षित स्थान की ओर भागे। सिपाही सुधाकर धुले यद्यपि घातक रूप से घायल हो चुके थे फिर भी उन्होंने निवृत्ति कोतवाल के साथ उनका पीछा किया और भाग रहे राष्ट्रविरोधी तत्वो में से एक को पकड़ लिया। बाकी बचे राष्ट्रविरोधी तत्व भी गांव के भीतर ही घेर लिए गए और अगले दिन उन्हें पकड़ लिया गया। गोलीबारी में लगी चोटों की वजह से बाद मे सिपाही सुधाकर धुले की मृत्यु हो गई परन्तु उनके इस उत्कृष्ट बलिदान से उनकी बटालियन को बहुत अधिक लाभ हुआ तथा पकड़े गए राष्ट्रविरोधियो तत्वों को अपने अथियारों सहित आत्मसमर्पण करना पड़ा।

इस प्रकार सिपाही सुधाकर धुले ने राष्ट्रविरोधी तत्वों के खिलाफ कार्रवाई मे उत्कृष्ट कोटि की वीरता, साहस और आत्म बलिदान की भावना का परिचय दिया।

17. 75089—राइफलमैन कामेश्वर प्रसाद,
असम राइफल्स (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख—5 मई, 1991)

राइफलमैन कामेश्वर प्रसाद अपनी टुकड़ी के अग्रिम सैक्शन में लाईट मशीन गनर नम्बर एक थे जिसे 5 मई, 1991 को दुधी चौकी पर कब्जा करने का काम सौंपा गया था। जब वह टुकड़ी दुधी चौकी की ओर जा रही थी तो इसकी मुठभेड़ अत्याधुनिक हथियारों और गोला-बारूद से लैस उनकी ओर बढ़ रही राष्ट्रविरोधी तत्वो की एक बड़ी टुकड़ी से हो गई। अपने कमांडर के आदेश पर तत्काल कार्रवाई करते हुए राइफलमैन कामेश्वर प्रसाद ने राष्ट्रविरोधी तत्वों की टुकड़ी से मुकाबला शुरू कर दिया। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए उन्होंने राष्ट्र-विरोधियों द्वारा अपनी टुकड़ी पर हमले करके उस पर काबू करने के प्रयासों को अपने निष्ठापूर्वक किए गए प्रयासों से विफल कर दिया। राष्ट्रविरोधी तत्वों का मुकाबला करते हुए वे एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर गोलीबारी करते रहे और अपने असाधारण कुशल से वे राष्ट्र-विरोधी तत्वों की गोलीबारी का साढ़े तीन घंटे से भी अधिक समय तक सामना करते रहे। उनकी वीरतापूर्ण कार्रवाई, कर्त्तव्य के प्रति उत्कृष्ट निष्ठा, मिलकर काम करने की भावना अद्वितीय साहस और कार्यकुशलता से उनकी टुकड़ी ने राष्ट्रविरोधी तत्वो के छक्के छुड़ा दिए और इस प्रकार भारत की सीमा में भारी संख्या मे घुसपैठ नही होने दी। उन्होंने स्वयं सात राष्ट्रविरोधियों को मार गिराया। इस कार्रवाई के दौरान उन्हें भी गोलियां लगी और दुर्घटना स्थल पर ही उनकी मृत्यु हो गई।

इस प्रकार राइफलमैन कामेश्वर प्रसाद ने राष्ट्रविरोधी तत्वों का बहादुरी से मुकाबला करते हुए अदम्य साहस एवं वीरता का परिचय दिया और सर्वोच्च बलिदान कर दिया।

18. 667412 सार्जेन्ट निरंजन मिश्र,
एयरफ्रेम फिटर

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख —17 मई, 1991)

सार्जेन्ट निरंजन मिश्र को 17 मई, 1991 को उड़ान पूर्व निरीक्षक (टैक आफइन्सपेक्टर) का कार्य सौंपा गया था। इन दोनों ने मिग 23 बी एन वायुयान के टायरों की जांच की और उसे उड़ान के लिए स्वीकृति दे दी। वायुयान सामान्य रूप से ही पटरी पर था किन्तु ज्यो ही उसे "रिलीट" किया गया वह बेकाबू होकर रन-वे से लुढ़क कर बाईं ओर झूल गया। अंततः बाड़े की दीवार पर बड़ी जोर से टकरा गया जिससे उसे अत्यधिक क्षति पहुंची और उसमें आग लग गई। सार्जेन्ट मिश्र दौड़कर रन-वे पार करके क्षतिग्रस्त वायुयान के निकट पहुंचे। वायुयान का अग्रभाग ध्वस्त हो चुका था और उसकी कैनोपी अवरुद्ध हो गई थी। तभी उन्होंने देखा कि पायलट जल रहे वायुयान में फंस गया है। पायलट स्तब्धावस्था में था। असाधारण सूझबूझ का परिचय देते हुए सार्जेन्ट मिश्र ने एक ईंट का इस्तेमाल करके कैनोपी को छिन्नभिन्न कर दिया और उसके टुकड़े हटा कर पायलट के लिए बाहर निकलने का मार्ग बनाया। तब तक आग की लपटें काकपिट और सार्जेन्ट मिश्र तक पहुंच चुकी थी किन्तु स्वयं पर मंडरा रहे गम्भीर खतरे की चिन्ता किए बिना बड़े ही साहस के साथ इन्होंने जलते हुए मलबे में से बाहर निकलने में पायलट अफसर एम० एस० निवल की सहायता की। पायलट अफसर निवल को थोड़ी सी चोटें भी आईं। काकपिट से पायलट के बाहर निकलने के कुछ ही मिनट बाद उसकी इंजेक्शन सीट मे आग लग गई। सार्जेन्ट मिश्र यह जानते थे कि यह बचाव कार्य ऐसा जोखिम भरा है जिसमें पायलट के साथ स्वयं इनकी जान भी जा सकती है।

इस प्रकार सार्जेन्ट मिश्र ने वायु सेना की परम्परा के अनुरूप अत्यधिक सूझबूझ एवं कर्त्तव्यनिष्ठा और अपने जीवन को खतरे में डालकर उत्कृष्ट कोटि के साहस एवं धैर्य का परिचय दिया। इनकी वीरता और समय पर की गई कार्रवाई से एक युवा पायलट के प्राण बच गए।

19 श्री मोहम्मद अनवर हुसैन,
अलीगढ़ उत्तर प्रदेश

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख—19 जुलाई, 1991)

19 जुलाई, 1991 को प्रातः काल एक मालगाड़ी ब्रेक खराब होने के कारण उत्तर प्रदेश रेलवे के मुरादाबाद डिवीजन के दो स्टेशनों के बीच रुक गई जिसमे 200 मवेशी और 53 मवेशी रखवाले सवार थे। ब्रेक की खराबी

को सुधारने के प्रयास में चालक, सहायक चालक तथा गार्ड गाड़ी से नीचे उतरे और खराबी का पता लगाने तथा उसे ठीक करने का प्रयास करने लगे। जिस समय वे लोग खराबी का पता लगाने में व्यस्त थे गाड़ी की ब्रेक छूट गई और गाड़ी इंजन में बिना रेल-कर्मी के चल पड़ी और तत्काल ही तेज रफ्तार से दौड़ने लगी। गाड़ी में सवार मवेशी-रखवालों का गड़बड़ का आभास हो गया। अन्य सभी आने वाले संकट की प्रतीक्षा में हाथ पर हाथ धर कर बैठ गए परन्तु श्री मोहम्मद अनवर हुसैन ने गाड़ी को रोकने के लिए कुछ करने का निर्णय लिया। अपने आप को भारी जोखिम में डालकर वह जिस डिब्बे में सफर कर रहे थे उसकी छत पर चढ़ गए और तेज हवा तथा गाड़ी की रफ्तार से विचलित हुए बिना डिब्बे से दूसरे डिब्बे पर छलांग लगाते लगाते इंजन के कैबिन तक पहुंच गए। इन्हें यह देखकर धक्का सा लगा कि इंजन के कैबिन में कोई नहीं है। परन्तु इन्होंने अपना धैर्य नहीं खोया और इंजन के विभिन्न स्विचों को चलाने लगे और अंत में एक स्विच दबाकर गाड़ी को रोकने में सफल हो गए। तब तक गाड़ी बिना रेल-कर्मीदल के लगभग 94 किलोमीटर दूर पहुंच चुकी थी। यदि वे यह साहसिक और शौर्यपूर्ण कार्य नहीं करते तो पूरी गाड़ी उसमें सवार सभी ग्वाले और मवेशी अपनी जान खो बैठते।

इस प्रकार श्री मोहम्मद अनवर हुसैन ने प्रतिकूल परिस्थितियों में अनुकरणीय साहस का परिचय दिया जिससे एक भयंकर दुर्घटना टल गई जिसमें न केवल 200 से अधिक मवेशियों और 53 मवेशी-रखवालों की अकाल मृत्यु हो जाती बल्कि रेलवे की बहुमूल्य संपत्ति भी नष्ट होती।

20. श्रीमती रेणु अग्रवाल, (मरणोपरांत)
सोनीपत (हरियाणा)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख—27 अगस्त, 1991)।

श्रीमती रेणु अग्रवाल दिल्ली में अपने काम पर आने के लिए अनेक अन्य दैनिक यात्रियों के साथ सोनीपत रेलवे स्टेशन पर खड़ी हुई थी। उसी समय उन्होंने देखा कि दो बच्चे उस रेल की पटरी पर खड़े हुए थे जिस पर अमृतसर जाने वाली 337 अप पैसेंजर गाड़ी आ रही थी। यह देखकर कि दोनों बच्चों का जीवन गम्भीर संकट में है, श्रीमती रेणु अग्रवाल अपने प्राणों की तनिक भी परवाह न करते हुए बच्चों को बचाने के लिए दौड़ीं। उन्होंने समय पर कार्रवाई करके दोनों बच्चों को तेजी से आ रही गाड़ी के आगे से सकुशल हटा लिया जिससे उन दोनों बच्चों की जान बच गई। परन्तु वह स्वयं समय पर गाड़ी के आगे से नहीं हट पाई और उसके नीचे आ गई।

इस प्रकार श्रीमती रेणु अग्रवाल ने अनुकरणीय साहस का परिचय दिया और अपनी जान की बाजी लगाकर उन्होंने दो बच्चों के प्राणों की रक्षा की।

21. कर्नल राजपाल सिंह शेरगिल
(आई० सी०—23890)—इन्फैन्ट्री।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख—29 अक्तूबर, 1991)

8 राज राइफल्स के कमान अफसर कर्नल राजपाल सिंह शेरगिल को 29 अक्तूबर, 1991 को एक बहुत ही विश्वसनीय बटालियन के आसूचना तंत्र से यह महत्वपूर्ण सूचना मिली कि उत्तरी रेंज के स्वयंभू कमांडर मेघ नाथ फूकन और लखीमपुर जिले की राजनीतिक शाखा के क्षेत्रीय कमांडर स्वयंभू लेफ्टिनेंट अनीरबान हजारिका खूंखार उग्रवादियों के एक दल के साथ गौमटी क्षेत्र में मौजूद हैं। कर्नल शेरगिल ने एक योजना तैयार की जिसके अनुसार कार्रवाई को आकस्मिक और गोपनीय बनाए रखते हुए चार कम्पनियों को दूर-दूर तक अलग-अलग दिशाओं में तैनात करके उनके बीच समन्वय बनाए रखकर उग्रवादियों को घेरना था। चारों कम्पनियां ने ठीक एक ही समय पर गौमटी गांव पहुंच कर उसे चारों ओर से घेर लिया और गांव से बाहर जाने के सभी रास्तों को बंद कर दिया। गांव के चारों ओर का घेरा छोटा करते हुए आतंकवादियों को उनके छुपने के स्थान से बाहर निकलने के लिए मजबूर कर दिया गया। चुनौती दिए जाने पर आतंकवादियों ने स्वचालित हथियारों से भारी गोलीबारी शुरू कर दी और हथगोले फेंके। कर्नल शेरगिल ने तुरंत ही उत्तर-पश्चिम और पश्चिम की ओर से आतंकवादियों पर तीन-तरफा हमला कर दिया। पश्चिम की ओर से कर्नल शेरगिल के दल ने भारी खतरे के बावजूद खूंखार उग्रवादियों पर हमला कर दिया जिसके परिणामस्वरूप स्वयंभू लेफ्टिनेंट मेघ नाथ फूकन मारा गया और स्वयंभू लेफ्टिनेंट अनीरबान हजारिका घायल हो गया तथा बाद में उसकी मृत्यु हो गई। इस मुठभेड़ के बाद यूनाइटेड लिबरेशन फ्रंट आफ असम के पांच खूंखार उग्रवादी पकड़ लिए गए और उनके पास से एक चीनी एम-22 असाल्ट राइफल, चीनी पिस्तौल, चीनी हथगोले और 95 राउंड गोलीबारूद बरामद हुए।

इस प्रकार कर्नल राजपाल सिंह शेरगिल ने अनुकरणीय साहस गतिशील नेतृत्व और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

सं० 22-प्रेज/92—राष्ट्रपति, निम्नलिखित व्यक्ति को उनके वीरतापूर्ण कार्यों के लिए "वीर चक्र" प्रदान किए जाने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

कैप्टन विजयन्त कुमार
(आई०सी०-42149), डोगरा रेजिमेंट

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 30 अप्रैल, 1989)।

मालटारो वाटरशैड में सामरिक दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण एरिया बिन्दु 6400 पर कब्जा करने के उद्देश्य से दुश्मन के कब्जे को हटाने और उसकी आक्रामक योजनाओं को विफल करने के लिए 11 अप्रैल, 1989 को सियाचिन के चुमिक-प्यागला ग्लेशियर क्षेत्र में "आईवेक्स" संक्रिया शुरू की गई थी। 2 डोगरा के कैप्टन विजयन्त कुमार का चयन एक विशिष्ट कृतिक दल के कमांडर के रूप में किया गया। 11 अप्रैल, 1989 को बेस कैम्प में पहुंचकर इन्होंने अकेले ही एक चीता हेलीपैड बनाने का काम शुरू कर दिया। इन्होंने सहायक बेस कैम्प के गठन और बेस कैम्प से ऊपर बिन्दु 6400 तक के मार्ग को आने-जाने योग्य बनाने का विशाल कार्य अपनी देख-रेख में करवाया। कैप्टन विजयन्त कुमार ने चार कार्मिकों को लेकर 26 अप्रैल, 1989 को आगे मार्च किया और बिम्प पर कब्जा कर लिया, जो बिन्दु 6400 से लगभग 500 मीटर दूरी पर था और बिन्दु 6400 की कुशलतापूर्वक रक्षा, करने की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण था। इस बिम्प से कैप्टन कुमार ने अनेक लक्ष्यों को पूरा किया। वहां से इन्होंने आर्टीलरी और मोर्टार फायर से दुश्मन के ठिकानों और मोर्चों पर अचूक गोली-बारी की व्यवस्था की। 30 अप्रैल, 1989 को शाम को संतरी ने अचानक "दुश्मन-दुश्मन" कहकर शोर मचाया और अपनी राइफल से फायर किया लेकिन तभी संतरी की राइफल सर्दी के कारण अचानक जाम हो गई। इसी बीच लगभग 10 पाकिस्तानी कम रोशनी का फायदा उठाकर हमारी गश्त के इलाके के अत्यन्त निकट आ गए और वे हमारे संतरी की गश्त से केवल 20 मीटर की दूरी पर ही रह गए तथा उन्होंने सुनिर्देशित नवु शस्त्रों से गोली-बारी करते हुए संतरी पर हमला करना आरंभ कर दिया। इस कार्रवाई में संतरी बुरी तरह से घायल होने के कारण वहीं ढेर हो गया। समय गवाए बिना कैप्टन विजयन्त कुमार ने अपने ग्रुप को फायर करने के लिए आदेश दिया और हवा में फटने वाले गोलाबारूद का इस्तेमाल करते हुए 84 एम० एम० राकेट लांचर से स्वयं भी गोला-बारी करने लगे। इनका एक सैनिक मरणासन्न पड़ा था, एक हल्की मशीन गन और इनके निजी शस्त्रों में से दो ने अत्याधिक सर्दी के कारण काम करना बन्द कर दिया था इसलिए स्थिति गंभीर हो गई थी। इस गंभीर जोखिमपूर्ण स्थिति के बावजूद इनके ग्रुप ने कारगर ढंग से दुश्मन के हमले को विफल कर दिया। इस कार्रवाई में लगभग सात सैनिक हताहत हो गए। कैप्टन विजयन्त कुमार दुश्मन के हमले

को नाकाम करके ही संतुष्ट नहीं हुए और अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की जरा सी परवाह किए बिना ये सामने के ढलान में रेंगते हुए लगभग 15 मीटर नीचे गए और दुश्मन द्वारा बांधी गई रस्सी को काट दिया। इसके तुरन्त बाद इन्होंने अपने सैन्य बल को पुनर्गठित किया और दुश्मन पर स्टीक गोलाबारी जारी रखने का निर्देश दिया। 1 मई, 1989 को ये सैन्यबल के साथ सतरी के शव और अपने सभी हथियार व रेडियो सेट को लेकर वापस बिन्दु 6400 पर आ गए। कैप्टन विजयन्त कुमार 1 मई से 4 मई, 1989 तक रक्षा व्यवस्था करने में मेजर एस० एस० गौतम की बराबर मदद करते रहे। इस पूरी कार्रवाई के दौरान इन पर दुश्मन की स्टीक गोलीबारी और मोरटार फायर होती रही। अन्तत: कैप्टन विजयन्त कुमार के दाहिने हाथ और पैर की उंगलियां थर्ड डिग्री फ्रॉस्ट बाइट की बीमारी से ग्रस्त हो गई और इन्हें विकलाग्न स्थिति में हेलीकाप्टर से 5 मई, 1989 को बेस कैम्प पहुंचाया गया।

इस प्रकार कैप्टन विजयन्त कुमार ने दुश्मन का मुकाबला करते हुए अदम्य साहस और वीरता का परिचय दिया।

सं० 23 प्रज 92—राष्ट्रपति, निम्नलिखित कार्मिकों को उनकी अति असाधारण कोटि की विशिष्ट सेवा के लिए "परम विशिष्ट सेवा मेडल" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. लेफ्टिनेंट जनरल हरवन्त सिंह (आई० सी०–7697), अ० वि० से० मे० कवचित कोर।
2. लेफ्टिनेंट जनरल अजय सिंह (आई० सी०–7745) अ० वि० से० मे०, कवचित कोर।
3. लेफ्टिनेंट जनरल जगदीश सिंह (आई० सी०–6703) वीर च० आर्टिलरी।
4. लेफ्टिनेंट जनरल तेज प्रताप सिंह (आई० सी०–7048), अ० वि० से० मे०, आर्टिलरी।
5. लेफ्टिनेंट जनरल मलय कुमार लाहिड़ी (आई० सी०–7012) इन्फैन्ट्री।
6. लेफ्टिनेंट जनरल फ्रांसिस टाइबर टियस डायस (आई० सी०–7044), अ० वि० से० मे०, वीर चक्र, इन्फैंट्री।
7. लेफ्टिनेंट जनरल विजय मदान (आई० सी०–7057), वि० से० मे०, इन्फैंट्री।
8. लेफ्टिनेंट जनरल नीरेन्द्र चन्द्र सान्याल (एम० आर०–00904, सेना चिकित्सा कोर।
9. लेफ्टिनेंट जनरल धरम बीर कालरा (आई० सी०–7107), अ० वि० से० मे०, सेना आयुद्ध कोर।
10. लेफ्टिनेंट जनरल कुलदीप कुमार मेहरा (आई० सी०–7958), वैद्युत और यांत्रिकी इंजीनियर।
11. लेफ्टिनेंट जनरल अजब सिंह भुल्लर (आई० सी०–6125), अ० वि० से० मे०, विद्युत और यांत्रिक इंजीनियर (सेवानिवृत्त)।
12. लेफ्टिनेंट जनरल महेन्द्र सिंह गोसाई (आई० सी०–6610), अ० वि० से० मे०, वि० से० मे०, इंजीनियर (सेवानिवृत्त)।
13. वाइस एडमिरल कनकीपति अप्पाला सत्यनारायण जगपति राजू, अ० वि० से० मे०, नौसेना मेडल, 00304–आर।
14. वाइस एडमिरल वसन्त लक्ष्मण कोप्पीकर, अ० वि० से० मे०, 00180–एच।
15. वाइस एडमिरल श्रीनिवास वामनराव लखकर, नौसेना मेडल, वि० से० मे०, 00191–एच।
16. वाइस एडमिरल इन्द्रशील वेंकाशिरि राव, अ० वि० से० मे०, 40061–वाई।
17. एयर मार्शल स्वरूप कृष्ण कौल, महा वीर चक्र (4721) उड़ान (पायलट)।
18. एयर मार्शल सुखदेव मोहन अ० वि० से० मे० (4789) उड़ान (पायलट)।
19. एयर मार्शल पिन्नापाक्कम मासिलमणि सुन्दरम, अ० वि० से० मे० (4857) चिकित्सा।
20. एयर मार्शल इन्द्रकान्ति गोपाल कृष्ण, अ० वि० से० मे०, वा० से० मे० (5398), वैमानिक इंजीनियरी (यांत्रिक)।
21. एयर मार्शल अब्राहम मैथ्यू अ० वि० से० मे० (4547), वैमानिक इंजीनियरी (इलैक्ट्रानिक) (सेवा निवृत्त)।
22. जी० ओ०–300–एफ० देवराज शंकर नारायण अय्यर, अपर महानिदेशक सीमा सड़क (सेवानिवृत्त)।

सं० 24–प्रेज/92—राष्ट्रपति, ब्रिगेडियर अजय बर्नवाम भसीन (आई० सी०–14667), इन्फैन्ट्री को उनकी असाधारण कोटि की विशिष्ट सेवा के लिए "उत्तम युद्ध सेवा मेडल" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं।

सं० 25–प्रेज/92—राष्ट्रपति, निम्नलिखित कार्मिकों को उनकी असाधारण कोटि की विशिष्ट सेवा के लिए "अति विशिष्ट सेवा मेडल" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. लेफ्टिनेंट जनरल राधे शाम भोला (एम० आर०–01395), सेना चिकित्सा कोर।
2. मेजर जनरल सतीश मोहिन्द्रा (आई० सी०–7381), सेना आयुद्ध कोर।
3. मेजर जनरल अशोक कुमार दास गुप्ता (आई० सी०–8606), इंजीनियरी।
4. मेजर जनरल प्रेम पाल सिंह (आई० सी०–11542), वि० से० मे०, इन्फैन्ट्री।
5. मेजर जनरल मोहिन्दर मोहन वालिया (आई० सी०–11830), सेना मेडल, इन्फैन्ट्री।
6. मेजर जनरल अमिताभ मुखर्जी (आई० सी०–12149), आर्टिलरी।
7. मेजर जनरल दीपकर बैनर्जी (आई० सी०–12313), इन्फन्ट्री।
8. मेजर जनरल राजपाल सिंह (आई० सी०–12369), से० मे०, इन्फैन्ट्री।
9. मेजर जनरल रत्नाकर पुरुषोत्तम लिमये (आई० सी०–11188), इन्फैन्ट्री।
10. रियर एडमिरल विजय कुमार मल्होत्रा, वि० से० मे०, 00396–जेड।
11. रियर एडमिरल रणजीत कुमार त्रिग, वि० से० मे०, 40152–बी।
12. सर्जन रियर एडमिरल गणेश प्रसाद पांडा, 75068–एच।
13. कमोडोर बलदेव भसीन, 60132–एन।
14. कमोडोर ओम प्रकाश बंसल, वि० से० मे०, 00660–जेड।
15. कमोडोर अरुण प्रकाश, वीर चक्र, वि० से० मे०, 00590–आर।
16. कमोडोर कुरुप्पथ वसुपुरथ विजयगोपालन, वि० से० मे०, 00785–एच।
17. एयर मार्शल मनजीत सिंह बोपराय (एम० आर०–00936), सेना चिकित्सा कोर।
18. एयर वाइस मार्शल सिध घट्ट मुब्बारामू, वीर चक्र (5371), उड़ान (पायलट)।

19 एयर वाइस मार्शल सबनवीस तिरुमल राव (5530) सेवा।

20 एयर कमोडोर सुदर्शन कुमार निझावन, वि० से० मे० (6223—एल), वैमानिक इंजीनियरी (यांत्रिक)।

21 एयर कमोडोर कुलदीप राज लाम्बा, वि० से० मे० (6242—टी), वैमानिक इंजीनियरी (यांत्रिक)।

22 एयर कमोडोर विनोद कुमार भाटिया, वीर चक्र और बार (6497), उड़ान (पायलट)।

23 एयर कमोडोर दर्शन सिंह बसरा, वा० मे० (6519) उड़ान (पायलट)।

24 ग्रुप कैप्टन अशोक कुमार मेहता, वि० से० मे० (6631—टी), संभारिकी।

25 ग्रुप कैप्टन धनवंत सिंह गुरम (10916), उड़ान (पायलट)।

26 ग्रुप कैप्टन पदमजीत सिंह अहलुवालिया, वा० से० मे० (11631), उड़ान (पायलट)।

27 ग्रुप कैप्टन दलबीर सिंह यादव, वा० मे० (4241), उड़ान (पायलट)।

28 जी० ओ०—170—के मुख्य अभियंता दीप्ति नाथ घोषाल।

सं० 26—प्रेज/92—राष्ट्रपति, फ्लाइट लेफ्टिनेंट प्रदीप गुप्ता (17349), उड़ान (पायलट) को उनकी उच्च कोटि की विशिष्ट सेवा के लिए 'युद्ध सेवा मेडल" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं।

सं० 27—प्रेज/92—राष्ट्रपति, निम्नलिखित अफसरों/कार्मिकों को उनकी असाधारण कर्त्तव्यनिष्ठा एवं साहसिक कार्यों के लिए "सेना मेडल/आर्मी मेडल" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं —

1 कर्नल राजेन्द्र सिंह (आई० सी०—23928), कुमाऊं रेजिमेंट।

2 कर्नल स्वर्ण सिंह होडा (आई० सी०—23634), इंजीनियर्स।

3 लेफ्टिनेंट कर्नल राज पोहा (आई० सी०—24620), आर्टिलरी।

4 लेफ्टिनेंट कर्नल रमेश हलगली (आई० सी०—27290 एम), सिख लाइट इन्फैन्ट्री।

5 लेफ्टिनेंट कर्नल हरजा (आई० सी०—32569), गढ़वाल राइफल्स।

6 मेजर विजय कुमार सिंह (आई० सी०—30355), 13 पंजाब।

7 मेजर सिद्धप्पा नारकर (आई० सी०—31574), सिगनल्स।

8 मेजर ज्ञान सम्पत कुमार राव (आई० सी०—37026), बिहार रेजिमेंट।

9 मेजर रणबीर सिंह (आई० सी०—31327), बिहार रेजिमेंट।

10 मेजर राहुल केशवराव भोसले (आई० सी०—30074), जम्मू तथा कश्मीर राइफल्स।

11 मेजर महेश कुमार माथुर (आई० सी०—31066), राजपूताना राइफल्स।

12 मेजर विरेन्द्र सिंह बडवाल (आई० सी०—31672), गढ़वाल राइफल्स।

13 मेजर शशांक मेहता (आई० सी०—34120), 8 गोरखा राइफल्स।

14 मेजर कंवल जीत सिंह राणा (आई० सी०—34796), सेना आयुद्ध कोर।

15 मेजर रंजन टंडन (आई० सी०—35176), कवचित कोर।

16 मेजर महेन्द्र सिंह (आई० सी०—36282), राजपूताना राइफल्स।

17 मेजर अरविन्द निगम (आई० सी०—36941), डोगरा रेजिमेंट।

18 मेजर डी० प्रदीप कुमार (आई० सी०—37016), गोरखा राइफल्स।

19 मेजर पटेल पोरंदला सुरेश कुमार (एम० आर०—5575), सेना चिकित्सा कोर।

20 मेजर कुलर बलदेव सिंह (आई० सी०—27093), पंजाब।

21 मेजर रमण कुमार नवानी (आई० सी०—31168), डोगरा रेजीमेंट।

22 मेजर अशोक कुमार बरुआ (आई० सी०—34979), आर्टिलरी।

23 मेजर विलोप प्रसाद (आई० सी०—39081), 20 कुमाऊं।

24 मेजर क्रिस्टोफर इम्मानुअल फर्नांडिस (आई० सी०—39500), बिहार।

25 कैप्टन विक्टर पीटर क्रिस्टोफर (आई० सी०—47887), 6 बिहार।

26 कैप्टन मोहन गोविन्दन नायर (आई० सी०—39642), मराठा लाइट इन्फैन्ट्री।

27 कैप्टन अच्युत कुटटीशंकर रवीन्द्रन (आई० सी०—42978), आर्टिलरी।

28 कैप्टन सुनील प्रताप राव भोंसले (आई० सी०—45535), जाट रेजिमेंट।

29 कैप्टन सुखचरण सिंह राय (एम० एस०—33254), राजपूत रेजिमेंट।

30 कैप्टन प्रकाश चन्द (आर० सी०—335), पंजाब रेजिमेंट।

31 सैकण्ड लेफ्टिनेंट अनुपम भागो (आई० सी०—48522), डोगरा रेजिमेंट।

32 सैकण्ड लेफ्टिनेंट गौतम चड्ढा (आई० सी०—48543), सेना सेवा कोर।

33 सैकण्ड लेफ्टिनेंट अमनदीप सिंह शेरे मेवास (आई० सी०—49053), ब्रिगेड आफ गार्ड्स।

34 सैकण्ड लेफ्टिनेंट थिथ्याबइल जैकब जचरिया (आई० सी०—49060), आर्टिलरी।

35 सैकण्ड लेफ्टिनेंट अनील राणा (आई० सी०—49064), 18 डोगरा।

36 जे० सी०—153030, सूबेदार कांशी राम राजपूत, जम्मू तथा कश्मीर राइफल्स (मरणोपरांत)।

37 जे० सी०—145637, सूबेदार गोपाल तमंग, 11 गोरखा राइफल्स।

38 जे० सी०—162582, सूबेदार कांशी राम, सिगनल्स।

39 जे० सी०—73132, सूबेदार कालू थापा, असम राइफल्स।

40 जे०सी०—156862, नायब सूबेदार परमेश्वरन थायकरन पिल्लै, मद्रास रेजिमेंट।

41 जे० सी०—157789, नायब सूबेदार राघवन नायर राजन, गार्ड्स।

42 जे० सी०—178543, नायब सूबेदार श्याम सिंह, 17 राजपूत।

43 जे०सी०—185738, नायब सूबेदार महा सिंह, 17 राजपूत।

44. जे०सी०-एन० वाई० ए०-1543986, नायब सूबेदार पार्ले यशवंत गणपति, इंजीनियर्स ।

45 13668923 कानो हवलदार मेजर शेर सिंह, 5 गार्ड्स ।

46 13737734 हवलदार अशोक कुमार 3, जम्मू तथा कश्मीर राइफल्स ।

47. 14455193 हवलदार सीतारामपामी नागराजन, आर्टिलरी ।

48. 14318372 हवलदार राजे सिंह, आर्टिलरी (मरणोपरांत) ।

49 2465383 हवलदार स्वर्ण सिंह, पंजाब रेजिमेंट ।

50. 2469015 हवलदार योग राज पंजाब रेजिमेंट ।

51 3373717 हवलदार स्वर्ण सिंह, 7 सिख ।

52. 3167428 लांस हवलदार राधा करण, जाट रेजिमेंट ।

53 3975272 लांस हवलदार बलराज सिंह, डोगरा रेजिमेंट ।

54 13616144 नायक सुरेन्द्र सिंह, पराशूट रेजिमेंट, (मरणोपरांत) ।

55 14350219 नायक रवीन्द्र नाथ डी० सी०, आर्टिलरी ।

56 1555042 नायक निर्मल सिंह, इंजीनियर्स ।

57. 2877197 नायक नरेश सिंह, 4 राजपूताना राइफल्स ।

58. 3376500 नायक बलीप सिंह, सिख रेजिमेंट (मरणोपरांतत) ।

59. 3975530 नायक प्रदीप सिंह, 18 डोगरा ।

60. 3975735 नायक सीता राम, डोगरा रेजिमेंट ।

61. 4255018 नायक मुद्रिका प्रसाद शर्मा, बिहार रेजिमेंट ।

62. 2477591 लांस नायक अवतार सिंह, पंजाब रेजिमेंट ।

63. 3379371 लांस नायक बलविन्दर सिंह, 6 सिख (मरणोपरांत)

64. 4175802 लांस नायक गोपाल सिंह, कुमाऊ रेजिमेंट (मरणोपरांत) ।

65. 13744209 लांस नायक सुरजीत सिंह, जम्मू तथा कश्मीर राइफल्स ।

66. 14910839 सिपाही कृष्ण कुमार, मैकेनाइज्ड इंफैंट्री ।

67. 2474613 सिपाही विजय सिंह चंबेल, पंजाब रेजिमेंट (मरणोपरांत) ।

68. 2477518 सिपाही प्रीतपाल सिंह, पंजाब रेजिमेंट ।

69. 2481214 सिपाही स्वर्ण सिंह, पंजाब रेजिमेंट (मरणोपरांत) ।

70. 2786622 सिपाही कोतवाल निवरुति यशवत, मराठा लाइट इंफैंट्री ।

71. 3383694 सिपाही बख्शीश सिंह, सिख रेजिमेंट (मरणोपरांत) ।

72 3387216 सिपाही सुखविन्दर सिंह, सिख रेजिमेंट (मरणोपरांत) ।

73. 3988440 सिपाही तिलक राज, 18 डोगरा ।

74. 4261356 सिपाही विक्रम सिंह, बिहार रेजिमेंट (मरणोपरांत) ।

75. 4266603 सिपाही सुरजीत सिंह, बिहार रेजिमेंट, (मरणोपरांत) ।

76. 4266587 सिपाही मोन्तर मोमिन, बिहार रेजिमेंट ।

77. 4268897 सिपाही लालन सिंह, बिहार रेजिमेंट ।

78. 4469467 सिपाही बलकार सिंह, सिख लाइट इंफैंट्री ।

79. 2883059 राइफलमैन सुधीर कुमार, 4 राजपूताना राइफल्स ।

80. 37730 राइफलमैन महेन्द्र सिंह, 3 असम राइफल्स (मरणोपरांत) ।

81 4065120 राइफलमैन वासुदेव सिंह, गढ़वाल राइफल्स ।

82. 9085511 राइफलमैन मोहम्मद शफी कुरेशी, जम्मू तथा कश्मीर लाइट इन्फैंट्री ।

83. 74910 राइफलमैन विनोद दास, असम राइफल्स (मरणोपरांत) ।

84. 75463 राइफलमैन बलवन्त सिंह, असम राइफल्स ।

85. 75482 राइफलमैन राम कुमार आर्य, असम राइफल्स (मरणोपरांत) ।

86. 66221450 हेड कांस्टेबल जसमेर सिंह, 36 बटालियन, सीमा सुरक्षा बल ।

87. सहायक कमांडेंट हीरा बहादुर गुरुंग (ए० आर०-168), 7 असम राइफल्स ।

88. 800671528 कांस्टेबल महावीर प्रसाद मीणा, केन्द्रीय आरक्षी पुलिस बल (मरणोपरांत) ।

सेना मेडल का बार

मेजर गुरिन्दर सिंह (आई० सी०-36063), से० मे०, ब्रिगेड ऑफ दि गार्ड्स ।

सं० 28-प्रेज/92—राष्ट्रपति, निम्नलिखित अफसरों/कार्मिकों को उनकी असाधारण कर्तव्यपरायणता एवं साहसिक कार्यों के लिए "नौसेना मेडल"/"नौसेना मेडल" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. कैप्टन विजय स्वरूप भटनागर, 00868-बाई ।
2. कैप्टन संग्राम सिंह गार्ड्स, 00883-एफ ।
3. एक्टिंग कैप्टन सुनील कृष्ण जी वामने, 01168-बी ।
4. कमांडर ब्रिजेश, 01250-आर ।
5. कमांडर अर्जुन सिंह भट्याल, 01520-बी ।
6. कमांडर ललला नागिर रेड्डी, 01674-बी ।
7. एक्टिंग कमांडर रणबीर सिंह, 01708-एफ ।
8. लेफ्टिनेंट कमांडर अरुणकीर्तवर सरवनपेरूमल, 040640-एन ।
9. लेफ्टिनेंट कमांडर रविन्द्र सिंह गिल, 01781-बाई ।
10. लेफ्टिनेंट कमांडर सेबस्टियन अनोलफस अकीज, 01869-बाई ।
11. लेफ्टिनेंट कमांडर संजय गोविन्द कर्चे, 02055-डब्ल्यु ।
12. लेफ्टिनेंट कमांडर (एस० डी० पी०) मनोहर सिंह नेगी, 86826-एफ ।
13. लेफ्टिनेंट विनेश राय, 02726-डब्ल्यु ।
14. लेफ्टिनेंट पेरूमबिलाविल राज कुमार, 03228-के ।

सं०-29-प्रेज/92—राष्ट्रपति, निम्नलिखित अफसरों/कार्मिकों को उनकी असाधारण कर्तव्यपरायणता एवं साहस के लिए "वायुसेना मेडल/एयर फोर्स मेडल" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. ग्रुप कप्टन अरुण दत्तात्रेय करवीकर (10865) उड़ान (पायलट) ।

2 ग्रुप कैप्टन फाली होमी मेजर (11442) उड़ान (पायलट)।

3. विंग कमांडर संजय बोस (12757) उड़ान (पायलट) (मरणोपरांत)।

4 विंग कमांडर जितेन्द्र पाल सिंह (63594) उड़ान (पायलट)।

5 विंग कमांडर मोहम्मद रजा शिराजी, शौर्य चक्र (7705) उड़ान (पायलट)।

6 विंग कमांडर मनशेर सिंह (9806) उड़ान (पायलट)।

7 विंग कमांडर रोनाल्ड बैनर्जी (11398) उड़ान (पायलट)।

8 विंग कमांडर गुरुइकबाल सिंह निज्जर (12020) उड़ान (पायलट)।

9 विंग कमांडर राम मोहन श्रीधरन (12033) उड़ान (पायलट)।

10. विंग कमांडर सुरेश चन्द्र मुकुल (12930) उड़ान (पायलट)।

11. विंग कमांडर नौरोज अभियकुमार मोदला (12931) उड़ान (पायलट)।

12. विंग कमांडर परमजीत सिंह भंगु (12932) उड़ान (पायलट)।

13 विंग कमांडर मोहन जौन (13131) उड़ान (पायलट)।

14 विंग कमांडर प्रदीप किनरा (13778) उड़ान (पायलट)।

15 स्क्वाड्रन लीडर कुलदीप मलिक (15181) उड़ान (पायलट)।

16 स्क्वाड्रन लीडर विनोद कुमार सिंह (15192) उड़ान (पायलट)।

17. स्क्वाड्रन लीडर अशीष रंजन (16230) उड़ान (पायलट)।

18 स्क्वाड्रन लीडर व्याकरणम्, वेंकट सूर्य सुब्बा राव (16633) उड़ान (पायलट)।

19 फ्लाइट लेफ्टिनेंट पशुपति वेंकटरमन (18689) उड़ान (पायलट)।

सं० 30-प्रेज 92—राष्ट्रपति "सक्रिया मेघदूत" के संबंध में रक्षा मंत्री द्वारा थलसेनाध्यक्ष से प्राप्त विशेषनामोल्लेख के बारे में सेकंड लेफ्टिनेंट विजय कुमार प्रसाद शर्मा (आई० सी०-49418), आर्टिलरी का नाम भारत के राजपत्र में प्रकाशन के लिए सहर्ष आदेश देते हैं।]

ए० के० उपाध्याय,
निदेशक

लोक सभा सचिवालय

(प्राक्कलन समिति शाखा)

नई दिल्ली-110001, दिनांक 9 मार्च, 1992

सं० 4/3(ii)) ई० सी०/92—श्री विजय एन० पाटिल, संसद सदस्य द्वारा समिति की सदस्यता से त्यागपत्र देने के कारण समिति के शेष कार्यकाल के लिए श्री आर० जीवरत्नम, संसद सदस्य को 6 मार्च, 1992 से प्राक्कलन समिति (1991-92) में कार्य करने के लिए निर्वाचित किया गया है।

बी० बी० पंडित
निदेशक

(कृषि समिति शाखा)

नई दिल्ली-110001, दिनांक 12 मार्च, 1992

सं० 6/3(1)/1/ए०सी०/91—श्री आर० जीवरत्नम, संसद सदस्य ने कृषि सम्बन्धी समिति की सदस्यता से 4 मार्च, 1992 को त्याग पत्र दे दिया है।

के० के० पांडा,
निदेशक

गृह मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 10 मार्च, 1992

सं० 21021/2/91-हिन्दी—दक्षिण बंगाल फ्रंटियर मुख्यालय, सीमा सुरक्षा बल कार्यालय में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों की संख्या 80 प्रतिशत से अधिक हो जाने के कारण उन्हें केन्द्रीय सरकार राजभाषा नियम, 1976 के उप-नियम 10(4) के अधीन अधिसूचित करती है।

एल० के० गर्ग,
उप सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 26th January, 1992

No. 20-Pres/92—The President is pleased to approve the award of 'Kirti Chakra' to the undermentioned persons for acts of conspicuous gallantry :—

1. JC-169170 Subedar Nopa Ram, Jat Regiment (*Posthumous*)

(Effective date of the award : 12th February, 1991)

On the 12th February, 1991 a Quick Reaction Team of 18 JAT of which Sub Nopa Ram was a member, was patrolling along Mari Megha drain near village Mallian of Amritsar District. They spotted a man suspiciously moving away from a farm house. The team commander quickly made a plan for intercepting the suspect. The team split into three groups, two groups each led by an officer, moved to the flanks to cordon the suspect and the third group led by Subedar Nopa Ram was directed to chase and capture him. The area was interspersed with sugar cane fields, eucalyptus trees and undergrowth due to cultivation. The suspect, on seeing Army Jawans, started running away. Subedar Nopa Ram who had by now organised his group, commenced the chase. While being pursued the terrorist had been firing with his AK-47 assault rifle taking advantage of the cover provided by crops and trees. Subedar Nopa Ram kept on chasing the terrorist without giving him any respite. He himself being a fast runner caught up with the terrorist and came as close as 10 metres. He opened fire on the extremist and wounded him. The terrorist also returned the fire which hit the Junior Commissioned Officer. At this stage, Subedar Nopa Ram found his magazine, he lunged on the terrorist and caught hold of the barrel of AK-47 rifle. Though seriously wounded, he exhibited tremendous courage and bravery and grappled with the terrorist who as trying to break away. Hand to hand fight ensued. With total disregard to his profusely bleeding wounds,

he continued to grapple with the terrorist and managed to overpower him. He did not allow the terrorist to escape for a long time. Meanwhile Lance Havildar Radha Karan reached there and shot the terrorist dead. The terrorist was identified as Swaran Singh Sona, a self styled Area Commander of Khalistan Commando Force. One AK-47 rifle, large quantity of ammunition and cocuments including letters from Chief of Khalistan Commando Force were recovered. However, the gallant Junior Commissioned Officer succumbed to his injuries.

Subedar Nopa Ram, thus, displayed conspicuous bravery in his fight against the terrorist and made the supreme sacrifice in the highest tradition of the Army.

2. JC-73334 Naib Subedar Padam Bahadur Chhetri, Assam Rifles.

(Effective date of the award : 5th May, 1991)

On the 5th May, 1991 Naib Subedar Padam Bahadur Chhetri alongwith 15 other Ranks going to occupy DUDHI Post in snow bound area in a high altitude had a fierce encounter with a large column of anti-national elements. Having come to know of the inadequate number of Other Ranks in the column, the anti-national elements tried to encircle them but Naib Subedar Padam Bahadur Chhetri made their attempt unsuccessful. He deployed his troops to engage them effectively and blocked their routes of escape. During the encounter, his column suffered three casualties which further reduced the strength of his party to 12 but he did not lose courage and he kept on fighting the anti-national elements for almost five and half hours. In this action, he alone killed nine anti-national elements while his column killed 29 others.

Naib Subedar Padam Bahadur Chhetri thus, displayed conspicuous gallantry, remarkable leadership and undaunted courage in the face of anti-national elements.

3. Flight Lieutenant Mysore Krishnaswamy Rama Prasad (18440) Aeronautical Engineering (Mechanical)

(Effective date of the award : 17th July, 1991)

On the 15th July, 1991, the fighter Squadron of Flight Lieutenant Mysore Krishnaswamy Rama Prasad moved to 41 Wing, Air Force for Live Armament Practice. On the 17th July, 1991, a MIG-27 ML air-craft No. TS539 armed with one 250 Kg bomb on the near fuselage station, and 100 rds of 30mm Front Gun ammunition had lined up on the runway for a pair take-off. As the throttle was opened, the pilot in the other air-craft noticed sparks and fire emanating from the rear of air-craft TS 539. The pilot of air-craft TS 539 was informed about the fire and asked to vacate his air-craft immediately. The rear of the air-craft was engulfed in fire by the time the crash tender arrived.

While the efforts to extinguish fire were going on, there was a grave danger of the 250 Kg bomb exploding at any instant. Flt Lt. Prasad jumped and pulled himself up to the cockpit and put the battery master and all armament switches off. He slipped while jumping down due to foam/water on the runway and injured his leg. Without bothering about the injury, he proceeded to open the panel that housed the fuel shut off cock. The fuel shut off cock was required to be closed to prevent further spread of fire. This panel was red hot as there was fire in its proximity at the time. He persevered and succeeded in opening the panel and closed the fuel shut off cock manually. Fully aware of the grave danger of the bomb exploding at any moment due to intense heat, Flt. Lt Prasad now moved to the 250 Kg bomb to remove its fuse and make it safe. The electrical release unit cartridge could have operated due to intense heat, thereby causing the bomb to release and possibly explode. Flt. Lt. Prasad, therefore, removed the electrical release unit cartridge, thereby eliminating the danger of accidental release of the bomb. He then removed the electrical connection to make the 30 mm gun safe. The timely action taken by Flt. Lt. Prasad prevented further damage to a costly air-craft and possible loss of several human lives.

Flt. Lt. Mysore Krishnaswamy Rama Prasad, thus displayed conspisuous courage and exemplary presence of mind in tackling a potentially dangerous situation.

4. 3984772—Sepoy Swaran Singh, 18 Dogra (*Posthumous*)

(Effective date of award : 8th August, 1991).

While cordoning and carrying out a search of the village Wolyas Kaonar and Zafarkhani by 18 Dogra on the 8th August, 1991, Sepoy Swaran Singh observed some suspicious movement in a clump of trees approximately 50 metres away. He informed his platoon commander, Second Lieutenant BJS Sandhu who alongwith six more jawans ruhsed to location with a view to engaging and apprehending the suspects. While they were advancing towards the place, they met with heavy volume of fire including that of Universal Machine Gun. Immediately, the fire was returned and the area cordoned off. On hearing the sound of fire, Captain Sandeep Shankla, who was carrying on the search of Zafarkhani village rushed to the location with his Quick Research Team. By the time he reached the location, Second Lieutenant Sandhu and Sepoy Swaran Singh were engaging the anti-national elements from the eastern direction, while other persons were deployed on the northern side of the ridge. On arrival, Captain Sandeep Shankla also deployed his Quick Reaction Team in the South eastern direction and he himself with his operator moved forward with Second Lieutenant Sandhu. Sepoy Swaran Singh was in the lead providing protection to Captain Sandeep Shankla and Second Lieutenant Sandhu. They crawled to a place as close as 10 yards to the location of fire and started engaging the anti-national elements. Sepoy Swaran Singh, displaying rare courage and chivalary, moved behind a tree which was a close as 5—7 yards of the location and fired at the anti-national elements, who numbered 15 and were hiding in that area. Sepoy Swaran Singh with his fire killed one of them instantaneously. However, the young soldier was hit by a burst of Universal Machine Gun on his chest. But this brave soldier continued to fire till he became unconscious due to excessive bleeding and later died. Had it not been for him, two officers and other jawans following him would have lost their lives.

Sepoy Swaran Singh, thus, displayed conspicuous bravery, valour and spirit of self sacrifice in the face of anti-national elements.

5. Major Mohinder Singh Pathania (IC-34879) Punjab Regiment

(Effective date of the award : 23rd Augst, 1991)

On the 23rd August, 1991 Major Mohinder Singh Pathania, a Company Commander of 19 PUNJAB was assigned the task of clearing the anti-national elements from Munir Hut, in Kirni area of Poonch Sector. He personally led the advance and was the first to charge into the hut. Taken by surprise, the anti-national elements fled away from rear side of the hut. Though wounded in the forehead, Major Pathania refused to be evacuated.

While clearing another position of the anti-national elements called Jalani Hut a patrol party consisting of 1 officer and 15 other Ranks was pinned down due to artillery shelling and automatic fire by the anti-national elements. Major Mohinder Singh Pathania rose to the occasion and led a party of 15 Other Ranks to link up with this patrol. This gallant Field Officer now led the attack on the Jalani Hut. After a fierce hand to hand fight, Major Mohinder Singh Pathania was able to capture the hut. The anti-national elements formed up for counter attack on the Jalani Hut but this brave officer moved from one trench to another inspiring his troops and setting a personal example of bravery. The enemy made another attempt to regain the lost hut but highly motivated men under command of this brave Company Commander repulsed the aggression.

Major Mohinder Singh Pathania, thus, displayed conspicuous bravery, tremendous courage, grit and determination throughout the operation.

6. 2875137 Naik Hari Singh, 4 Rajputana Rifles. (*Posthumous*)

(Effective date of the award . 29th August, 1991)

On the 29th August, 1991 Naik Hari Singh was a member of the patrol of 4 RAJ RIF which was operating on the line of control with Pakistan in Gutham Dhori area of Kupwara District in Jammu and Kashmir. He spotted a group of terrorists at a Distance of 30 yards, warned his patrol and in a daring act charged towards the terrorists with lightening speed. In this process, he received gun shot injuries in his abdomen. Undeterred, he shot dead one terrorist with his rifle fire and continued his charge. He got injured a second time with a terrorist's bullet but this courageous Non-Commissioned Officer continued his fight and killed one more terrorist. In this process, a bullet passed through his neck and he died on the spot. The fury and speed with which he acted, terrified the terrorists so much that they ran away leaving behind 28 AK-56 rifles, one automatic machine gun, two Rocket Launchers and over five thousand rounds of ammunition.

Naik Hari Singh, thus, displayed conspicuous bravery, valour and spirit of self sacrifice in his fight against the terrorists.

7. Colonel Inderjit Singh (IC-22575), VSM, Infantry

(Effective date of the award : 24th September, 1991)

On the night of the 23rd 24th September, 1991 Colonel Inderjit Singh, Commanding Officer, 7 Assam Rifles was leading a Column to check infiltration of Pakistan trained anti-national elements in Kupwara Sector. At approx 0100 hours on the 24th September, 1991 he got information about a garg infiltrating across the line of control. Colonel Inderjit Singh immediately organised an ambush along the route of infiltration. The ambush was planned and commended by the Commanding Officer. As the infiltrators moved into the ambush site, the noose was tightened. They were warned to surrender. But the infiltrators opened heavy fire and grenades were thrown at him. The officer acted with courage and determination and directed accurate fire on the infiltrators and killed 21 of them. One was wounded and captured. Thus, almost the entire group of 22 was annihilated without a single casualty to the Indian troops. Altogether 20 AK-56 rifles, 1 rocket launcher, one pistol, over 3000 rounds of assorted ammunition and a large quantity of important documents were captured in this highly successful ambush.

Colonel Inderjit Singh, VSM, thus, displayed conspicuous courage, high quality of leadership, planning capability and foresight in organising a successful operation against the infiltrators.

8. Shri Pandillapalli Srinivas, IFS, East Godawari, Andhra Pradesh. (*Posthumous*)

(Effective date of the award · 10th November, 1991)

Shri P. Srinivas, an IFS officer of the Karnataka cadre was a member of the Special Task Force created by the Karnataka Government for tracking down Veerappan and his gang of timber smugglers operating in the forests of Karnataka, Tamil Nadu and Kerala. He had undertaken several programmes for the benefit of the tribal community residing in the forests and created an environment in which Veerappan had found it difficult to operate. Shri Srinivas had, therefore, become a target for the Veerappan gang.

Shri Srinivas was praying at a temple when Veerappan's brother Arjun approached him and confided that Veerappan wanted to surrender. Shri Arjun also stated that Veerappan's condition for the surrender was that no police officer should be present. Acting on this information, Shri Srinivas proceeded to the rendezvous indicated. He was accompanied by 4 men, one of whom was smuggler turned informer. Shri Srinivas was unarmed. As soon as he with his party, reached the rendezvous at about 5 a.m. on the 10th November, 1991, Veerappan ordered his lieutenant, Kollandi to shoot Shri Srinivas who fell in a hail of bullets. The body of the 37 year old Forest Officer was found half-burnt with the head missing, when a search unit came across it in the morning.

Shri P. Srinivas, thus, set a supreme example of courage and dedication to duty at the cost of his own life.

No. 21-Pres/92.—The President is pleased to approve the award of 'SHAURYA CHAKRA' to the undermentioned persons for acts of gallantry :—

1. Shri Hazara Singh, Kapurthala, Punjab (*Posthumous*)

(Effective date of the award : 27th July, 1992)

On the 27th July, 1990, at about 11.30 hours, Shri Hazara Singh, the gunman of Punjab & Sindh Bank at branch office Dayalpur, Distt. Jalandhar, opened the grill gate to let in a batch of 8–10 customers. A robber under the guise of a customer confronted him and tried to snatch his gun with the intention of looting the cash held by the branch. The gunman holding the gun tightly with his shoulder and arm, grappled with the robber with the other hand and shouted for help to apprehend him. Engaged by the resistance of the gunman, the second robber who had already sneaked inside the branch with the previous batch of customers and was at that time standing behind the customers in front of the counter whipped out his pistol and fired indiscriminately at the gunman. On hearing the gunshots, the bank staff as well as the customers ran helter and skelter for a safe place and lay down on the floor. Shri Hazara Singh, inspite of being injured, continued holding on to the robber and resisted snatching of his gun. In the meantime, the said robber managed to take out his pistol and in desperation shot several rounds at Shri Hazara Singh at point blank range and killed him there. Consequent to this commotion, the robbers failed to loot any cash or bank gun and fled on their motor cycle parked outside the branch.

Shri Hazara Singh, even at the cost of his life, showed the highest sense of devotion to duty, alertness of mind and exemplary courage in foiling the robbery attempt and protecting the lives of other bank staff and customers.

2. 13735991 Havildar Man Bahadur Gurung, Jammu & Kashmir Rifles. (*Posthumous*)

(Effective date of the award : 28th July, 1990)

On the 28th July 1990, Havildar Man Bahadur Gurung of 19 Jammu & Kashmir Rifles was travelling by 5815 UP-Guwahati-Varanasi Express on termination of his annual leave to rejoin his unit located in field in connection with 'Operation Rakshak'. A gang of armed robbers stopped the train and entered the military coach between Dhamharghat and Kaparia Railway Stations. Havildar Man Bahadur Gurung accompanied by fellow soldiers put up a stiff resistance. When the robbers resorted to violence, Havildar Gurung unmindful of his own safety, led a gallant attack on the armed dacoits with only Khukri in hand. He was ably assisted by Rifleman, Gokul Kumar Gurung of 6/5 Gorkha Rifles and Lance Naik Prem Bahadur of 2 9 Gorkha Rifles. The dacoits in the scuffle shot them dead at point blank range. It was, however, later revealed that one robber had been killed and numerous others injured by his brave and fearless action resulting in the robbers fleeing without causing any further damage to life and property.

Havildar Man Bahadur Gurung showed conspicuous courage, exemplary civic sense and made the supreme sacrifice of his life in the finest tradition of the Army.

3. 5843801 Rifleman Dhan Bahadur Chhetri, 2/9 Gorkha Rifles.

(Effective date of the award : 28th July, 1990).

On the 28th July, 1990, the GL Express coming from Guwahati to Varanasi was intercepted and stopped by dacoits between Dhamarghat and Koparia in Bihar. Soon they started looting each bogey systematically. Rifleman Dhan Bahadur Chhetri and some other Jawans were travelling in this train to join their Units. Rifleman Dhan Bahadur Chhetri and five other Jawans who were travelling in the same compartment closed the doors of the compartment and told the civilians not to be afraid and to lie down on the

floor of the compartment as they would be safe if the dacoits resorted to firing. The Jawans quickly made a plan to fight the dacoits. Accordingly, some of them who had Khukries kept them ready for use.

As anticipated, the dacoits came to where the Jawans were waiting. They banged at the door and threatened the passengers of dire consequences. Being impatient they broke the glass pane and pushed the barrel of their weapons inside. At this juncture the passengers out of fear opened the door. Once they entered the compartment they started picking up the baggages of the passengers. Some of the dacoits forced the first three Jawans. They encountered near the door to part with their cash valuables. These Jawans resisted but the trigger happy dacoits shot them at point blank range and killed them instantaneously. Rifleman Dhan Bahadur who was all along waiting for the kill, though surprised at the suddenness of the dacoits shooting, could not bear to see his comrades murdered in cold blood. He, without an iota of care for his personal life, lunged at the armed dacoits with his Khukri and the battle cry of his Regiment "Ayo Gorkhali" on his lips. The swiftness of the assault by a well trained and highly motivated Jawan of the Army took the dacoits totally off guard and they tried to beat a hasty retreat. He threw his Khukri at the fleeing dacoits and injured one of them, who however, managed to escape. He picked up his Khukri and ran after the dacoits at the peril of his own life and managed to hit another dacoit. By this time Rifleman Man Bahadur Chhetri and Rifleman Ram Bahadur Thapa joined the attack and ensured that the dacoits fled in their boats. Thus, these three brave Jawans saved the entire train.

Rifleman Dhan Bahadur Chhetri displayed exemplary courage in foiling attempted robbery of train passengers at grave risk to his own life.

4. 2872410 Havildar Jagdish Prasad, Rajputana Rifles.

(Effective date of the award : 14th August, 1990)

On the 14th August, 1990 Havildar Jagdish Prasad of 9 Madhya Pradesh Battalion, National Cadet Corps Indore was returning to the Unit Lines on his bicycle after imparting routine training to the cadets of PMB Gujarat Science College, Indore. At about 11.15 hours when he was near Central Bank of India, Sanyogitaganj Branch, Indore, he heared cries for help from a woman and a man injured by some miscreants. He also saw two young men running away in the direction indicated by the victims. Havildar Jagdish Prasad immediately rushed through a short cut and started chasing the culprits and finally closed on to them. As he approached the two culprits, he noticed that both of them were youngmen in late twenties and were armed with knives which had fresh stains of blood. Havildar Prasad also noticed that one of them was holding a bag containing cash snached from the victims. Without caring for his personal safety, Havildar Prasad leapt on the two culprits and a prolonged and desperate scuffle ensured. He fought single handedly with the two armed men, one of whom attacked him with the knife. In the process, one of the two desperadoes managed to run away while the other was overpowered by Havildar Prasad who also managed to get hold of the bag containing Rs. 30,000/-. The apprehended culprit along with the said bag was later handed over to the local police authorities.

Havildar Jagdish Prasad, thus, displayed conspicuous gallantry and exemplary civic sense in capturing a robber.

5. Shri Sudarshan Kumar, Amritsar (Punjab)

(*Posthumous*)

(Effective date of the award : 24th August, 1990)

On the 24th August, 1990, when Shri Sudershan Kumar came to his rice mill, two terrorists armed with AK-47 Rifles pushed him inside the main gate. While all other persons standing there took to their heels at the sight of the terrorists, he tried to plead with them. But finding that they were bent upon shooting him down, he pounced upon one of them and managed to hold him fast and used him as a shield against the attack of the other terrorist. With commendable presence of mind, Shri Sudarshan Kumar emptied the magazine pressing the trigger with his own fingers. All shots fired by the other terrorist hit his own companion who died at the spot and Shri Sudershan Kumar remained safe till two other terrorists who were waiting outside, jumped across the boundary wall responding to the call of help from their companion. Unarmed, Shri Sudershan Kumar gallantly faced the three terrorists firing from different sides till he succumbed to a close shot on his head.

Shri Sudershan Kumar, thus, exhibited conspicuous valour and exemplary courage and made the supreme sacrifice of his life while fighting the terrorists.

6. 8030794 Pioneer (GD) Jugraj Singh Meena

(*Posthumous*)

(Effective date of the award : 4th September 1990)

Jugraj Singh Meena of 1563 Pioneer Company (Army) was attached to 56 Road Construction Company, Project Beacon of Border Roads Organisation for duty as armed escort/guard.

On the 4th September, 1990, he was detailed to escort Assistant Engineer (Civil) M Balakrishna Kurup, platoon Commander of 369 Road Maintenance Platoon Care 56 Road Construction Company who was proceeding for inspection of works on Woyil Byepass via Manasbal in a Jonga Driven by Pioneer Rajendran of 1582 Pioneer Company. Their vehicle was ambushed by the militants near Manasbal Lake, Srinagar. Pioneer Jugraj Singh Meena jumped out of the vehicle as soon as it stopped, took position and started engaging the militants single handedly, although, he was out numbered in strength. Pioneer Jugraj Singh Meena maintained his position with complete disregard to his personal safety and continued firing on the militants till he sustained a number of bullet injuries and breathed his last on the spot alongwith his officer and driver.

Thus, Pioneer Jugraj Singh Meena displayed exemplary courage and resolute determination to fight the militants without caring for his own life and safety while performing his duty.

7. Shri Jaman Singh Rawat, Dehradun (U.P.)

(*Posthumous*)

(Effective date of the award : 15th September 1990)

On the 15th September, 1990 at 11.00 A.M. three persons armed with pistols and AK-47 assault rifles came to Dehradun-Hardwar Road branch of the State Bank of Patiala. One of them entered the bank and proceeded towards the cabin of the Branch Manager with the object of looting the Bank's cash. Shri Jaman Singh Rawat, Armed-guard, who was on duty, sensing trouble, challenged the intruder. At this, the intruder fired 2 pistol shots at him. In retaliation, Shri Rawat, though badly injured, also fired back from his service gun and injured the intruder. On seeing the dacoity did being foiled, the other two armed robbers started firing indiscriminately from their AK-47 assault rifles. In the process, Shri Rawat and three persons from public who were inside the bank were killed on the spot and eleven other injured.

Shri Jaman Singh Rawat exhibited exemplary courage, high presence of mind and devotion to his duty in foiling the attempted robbery at the cost of his own life.

8. 13748993 Rifleman Dalip Singh, Jammu & Kashmir Rifles. (*Posthumous*)

(Effective date of the award : 19th October, 1990)

On the 19th October, 1990 Rifleman Dalip Singh was going to his village Phool Piara, Tehsil Pathankot, District Gurdaspur (Punjab). Unwittingly, he alongwith a few other villagers got into an ambush laid by four terrorists armed to the teeth with automatic weapons on the outskirts of village Phool Piara. Rifleman Dalip Singh with his quick reflexes, indomitable spirit and skill rushed to break the ambush without having any arms. He succeeded in catching one terrorist and made an attempt to snatch his weapon and kill the terrorists. This sudden retaliation unnerved the terrorists and helped the trapped villagers to escape from the ambush site. Rifleman Dalip Singh was shot many times by the terrorists but he kept on fighting with them all alone till he collapsed and died on the spot. He displayed an act of great courage in true tradition of the Indian Army.

Rifleman Dalip Singh thus showed exemplary courage and saved many innocent lives at the cost of his own life.

9 IC-44017-N Capt Kishore Geer Bava, Border Road Organisation

(Effective date of the award : 20th October 1990)

Capt Kishore Geer Bava, Officer-in-charge of 333 Surfacing Platoon Care 53 Road Construction Company, Project BEACON of Border Roads Organisation, was entrusted with the work of maintenance, improvement and strengthening of strategically important National Highway 1A Srinagar-Baramulla-Uri Road, during April to November, 1990.

In this sensitive area where militants are highly active, it was difficult to motivate and put his men and machinery on the road without problems. The magnitude of the problems was further accentuated as the militants started attaching BRO personnel at their camp work sites and during moves in vehicles/convoys. Residual morale of BRO personnel was shattered after the Organisation lost a few precious lives at the hands of the militants in the area. Under these circumstances and realising the significance of his mission, Capt K. G. Bava meticulously planned, reorganised and mobilised his resources skillfully amidst heavy odds in trying conditions unmindful of his own safety and comfort. He always remained with his men, despite the fact that he escaped a few attacks on his life by the militants. With undaunted courage and dogged determination, he marched ahead with the task of strengthening the pavement, erecting permanent work infrastructure and maintenance of road effectively and efficiently for smooth flow of troops and traffic.

In July 1990, Capt KG Bava was entrusted with the additional task of construction of Aviation Base Sharifabad, a task of operational significance which was to be completed by November, 1990. He took up the challenge, organised his men and material and proceeded with professional competence and dogged determination to execute the task on schedule despite hostile environment in which he and his men were deployed without any security cover

On the 20th October, 1990 Capt KG Bava was caught in a dreaded ambush on Jammu-Kashmir Bypass in the evening while he was returning with the spare parts for his Marshall Plant. The occupants of the vehicles of the convoy were panic stricken. Even after witnessing fierce bullets hitting his vehicle, Capt KG Bava remained calm and without loss of time he managed to disengage his convoy skilfully. Inspired by his personal example, resolute courage, dogged determination and devotion to duty his subordinates got motivated to work courageously against heavy odds and accomplished the operational task within a record time.

Capt. Kishore Geer Bava, thus, displayed outstanding and meritorious capabilities of man management, technical skill, professional competence and great valour.

10. G-16443-F Pioneer Behra Ram (*Posthumous*)
Border Road Organisation

(Effective date of the award : 10th December 1990)

Pioneer Behra Ram of 1611 Pioneer Company was attached with 118 Road Construction Company of Project Himank of Border Roads Organisation and was deployed on road Leh-Chalunka for snow clearance operation.

The road Leh-Chalunka is of tactical and strategic importance and is also the lifeline of the troops deployed on the northern side of Khardungla pass in the Siachen Glacier. This is the highest motorable road in the world with an altitude ranging from 14000 ft. to 18380 ft. and during winter the temperature going down to 30°C in this area. Heavey blizzards, snow slides and avalanches are almost a daily occurence. Under such adverse conditions Pioneer Behra Ram was detailed as helper to guide the dozar operator during snow clearance operation from the 15th November, 1990.

During the night of the 9th/10th December, 1990 this area experienced heavy snow fall accumulating approximately 5 metres of the road. Poineer Behra Ram alongwith Poineer Rajendra Ram was ordered to help operator Excavating Machinery Thangaraian to clear the snow as an army convoy carrying essential operational stores was required to pass through to the northern side of Khardungla Pass. The team commenced their work at 06.00 hours when it was still dark unmindful of the risk to their own life. The task was very dangerous due to poor visibility and possibility of imminent snow avalanche. While they were assisting the dozer operator around 09.00 hours there was a snow slide and Pioneer Rajendra Ram was partially buried in the snow. Poineer Behra Ram helped and extricated Pioneer Rajendra Ram from the snow. There were chances of another snow slide but the team continued to carry out the snow clearance with full knowledge of the risk involved. After about five minutes, another snow slide occurred and Pioneer Rajendra Ram was again buried in the snow upto his chest Pioneer Behra Ram who had by then reached the bridge, ran back to rescue Pioneer Rajendra Ram but before he could reach him, there occurred in avalanche of high intensity and both men were swept away by the snow avalanche into the valley and having been hit by boulder and buried in the snow, died.

Pioneer Behra Ram, thus, displayed dedication to duty and bravery of an exceptional order making the supreme secrifice in action beyond the call of his duty.

11. Capt. Harendra Singh (IC-47454),
9 Gorkha Rifles

(Effective date of the award : 14th January, 1991)

Capt. Harendra Singh was returning to the unit Lines after apprehending a hardcore United Liberation Front of Assam militant on the 14th January, 1991. On his way, he saw three persons riding a Yamaha Motorcycle coming with great speed from the opposite direction. These motorcyclists were signalled to stop by the leading car. Instead of reducing the speed, they accelerated and managed to pass by the leading car. Capt. Harendra Singh travelling in the following car watched this scene. He immediately flung open the door of his car in order to apprehend the fleeing motorcyclists. Once these motorcyclists reached near his car, he spotted a weapon slung on the shoulder and hidden under the coat of one of the pillion riders. The officer with utter disregard to his personal safety, Jumped on the fleeing motorcyclists and caught one of the pillion riders with M 22 Assault Rifle. Due to this swift action, the motorcyclists lost control and toppled. One of the militants immediately got behind his car and started firing with the pistol. This militant even ordered the militant struggling with Capt Harendra Singh to throw hand grenade. Meanwhile, his troops immediately returned the fire, injuring one of the militant. The third militant fled to the nearby dense jungle. The militant struggling with Capt Harendra Singh had HE 36 primed hand grenade in his right hand and loaded M. 22 Assault Rifle in his left hand. This militant kept on hitting Capt. Harendra Singh with the muzzle of the Assault Rifle in order to free himself to enable him to throw hand grenade and use the deadly weapon but Capt. Harendra Singh, though injured, pinned him down. This militant was subsequently overpowered with the help of other members of his party. In this action, one M 22 Assault Rifle and one HE 36 primed hand grenade were recovered from the militant.

Capt. Harendra Singh thus, displayed courage, determination, initiative and leadership qualities of exceptionally high order in the fact of the militants.

12. Second Lieutenant Priyadarshi Chowdhury
(IC-49481), 11 Sikh.

(Effective date of the award : 19th January 1991)

Second Lieutenant Privadarshi Chowdhury was an Intelligence and surveillance Officer of 11 Sikh located in Punjab

in the area of Operation "RAKSHAK". On the 19th January 1991 at about 16.00 hours, his Unit was ordered to carry out cordon and search operation in the vicinity of village Nihalke in Ferozepore district where a gang of nine terrorists armed with deadly weapons like AK-47 rifles, self loading rifles and rocket launchers had stationed themselves. Of these, four terrorists were hiding themselves in a forcibly occupied farm house while the remaining five were in the eucalyptus grove. Coy 'A' was deployed on the South and 'B' Company on the west side of the farm house from where the terrorists were firing effectively. Second Lieutenant Priyadarshi Chowdhury on reaching 'A' Company locality discovered that one of the Border Security Force Jawan was being effectively engaged by the terrorists. The young officer moved under hostile fire and successfully extricated the Border Security Force Jawan to safety. Thereafter, the young officer moved to No. 6 Platoon of 'B' Company which was asked to clear the farm house. On finding that the Rocket Launcher No. 1 could hit only one rocket out of the two fired, Second Lieutenant Priyadarshi Chowdhury took over as Rocket Launcher No. 1 and moved close to the farm house and hit it with 84 mm Rockets successfully for three times scoring cent percent hits. By now the visibility was diminishing. Second Lieutenant Priyadarshi Chowdhury picked men of No. 6 Platoon, moved closer to the farm house and lobbed hand grenades after climbing the roof top . Then with lightening speed and with utter disregard to his personal safety the officer jumped from the roof and kicked open a door of a room from where two terrorists were firing from a fortified position. Through the open door, the officer lobbed one more grenade and at the instant of grenade burst he entered the room spraying it with bursts from his carbine and killing three terrorists.

Second Lieutenant Priyadarshi Chowdhury, thus, displayed conspicuous courage and devotion to duty in his fight with the terrorists.

13. G/110082-W operator Excavating Machinery Jagdish Raj.

(Effective date of the award : 20th January, 1991)

Operator Excavating Machinery Jagdish Raj of 359 Road Maintenance Platoon Care 113 Road Construction Company Project Himank of Border Roads Organisation was deployed on snow clearance operation on road Leh-Chalunka with his dozer.

It is the highest motorable road in the world and passes through Khardungla Pass at an altitude of 18380 ft. and the minimum temperature range between (-) 30 to (-) 40 degree celsius. The road between km. 25 to 72 particularly is prone to frequent landslides, snowslides and avalanches. 113 Road Construction Company was assigned the task of keeping the road open for traffic in order to ensure logistic support to the troops deployed in Siachen Glacier.

Operator Excevating Machinery Jagdish Raj was deployed during the winters of years 1988-89, 1989-90 and 1990-91 with the responsibility of clearing the snow accumulation between KM 43 and Khardungla Pass. On one occasion in the winter of 1988-89, he was engulfed in a snow slide and was buried under snow alongwith his dozer. Inspite of being injured, he extricated himself and continued to work with his dozer in the face of constant threat of burial under snow. He was later evacuated to Command Hospital, Chandigarh with multiple injuries. Inspite of his injury Operator Excavating Machinery Jagdish Raj again volunteered for snow clearance in the winter of 89-90. Working with extraordinary courage and dedication to duty, he kept the road open throughout the year. In the year, 1990, the condition of his right eye had leteriorated, but inspite of this handicap, he once again volunteered for snow clearance duty for the winter 1990-91 The persuasion of his Officer Commanding not to work on snow clearance, did not deter him and he volunteered for the work. He was deployed for the snow clearance operation between KM 43 and Khardungla Pass in November, 1990. For three months, he worked continuously braving severe blizzards and the risk of snow slides and avalanches in the extreme sub zero temperature. With utter disregard to the injury in his right eye and to his own personal safety, he kept the road open for traffic throughout the year. By the 20th January, 1991, the condition of his right eye deteriorated further and he was forcibly evacuated to General Hospital, Leh. The right eye of this bold and dedicated Operator was later moved at Command Hospital, Chandigarh.

Operator Excavating Machinery Jagdish Raj, thus, displayed firm determination, dedication to duty of a high order and courage over an extended period of time. With utter disregard to his personal safety and comfort, he worked on the most difficult sector for snow clearance and set an example of courage and dedication.

14. Captain Chembanda Machaiah Thimanna, (IC-49398), Artillery
(Effective date of the award : 9th March, 1991)

Captain Chembanda Machaiah Thimanna was detailed to curb the ULFA activities in area Mangaldai where the activists use to extort money from local businessmen and the tea estates. He was given the task of apprehending Mr. Swaraj Kumar Deka and Mr. Arup Baruha who extorted money in this area at pistol point. On getting a clue that Mr. Swaraj Deka was having dinner at Hotel Elora, Capt. Thimanna went to the hotel. It was dark with very dim light inside the hotel. From his knowledge from the photograph, Capt. Thimanna challenged Swaraj Deka. Swaraj Deka, at this juncture, took out a dagger and attacked Capt. Thimanna swiftly leapt on Swaraj Deka and using his physical strength, snatched the dagger and threw it outside the hotel. This was followed by a fierce unarmed combat for 15 minutes. Capt. Thimanna threw Swaraj Deka on the ground and sat on his chest. Swaraj Deka, finding no alternative except to surrender to this daring and strong man, raised his hands and announced his surrender. Interrogation of Swaraj Deka bore fruit and give clue to the apprehension of Arup Baruah, who was much more feared by the local population. His house was kept under surveillance day and night by Capt. Thimanna. On getting information about Arup Baruah's visit to his house on the 9th March, 1991, Capt. Thimanna cordoned off his house and broke open the door. Arup Baruah jumped out of the window and started running taking advantage of the darkness of night. Capt. Thimanna without regard to his personal safety, jumped out of the same window and followed Arup Baruah. This was followed by a big fight in which Capt. Thimanna was slightly hurt. Showing great determination, Capt. Thimanna could manage to overpower Arup Baruah after a hand to hand fight for ten minutes.

Capt. Chembanda Machaiah Thimanna, thus, displayed conspicuous courage in apprehending two hardcore activists.

15. 2770106 Havildar Trimbak Dada Nimse, 26 Maratha Light Infantry. (*Posthumous*)

(Effective date of the award : 19th March 1991)

On the 19th March 1991, a patrol of 'B' Company of 26 Maratha Light Infantry was sent to Baida in Assam to apprehend a militant suspected to have taken shelter there. Havildar Trimbak Dada Nimse was the scot commander of the patrol party. On identification of the house, Havildar Nimse crawled close to the house and laid a strong cardon. So quite and swift where his movements that the dangerous militant named Amrit Rabha remained completely unaware of the movement outside his hut. Subedar Yeshwant Sarjerao Mahadik accompanying the patrol knocked at the door. The militant jumped out of window and picked up a 'Dah' and ran towards Havildar Trimbak Dada Nimse, who immediately engaged the militant in a hand to hand fight. He soon overpowered this militant. On a search, an amount of Rs. 20,550/- was recovered. On detailed interrogation, the captured militant gave out valuable information of the organisation and then, led to the capture of two United Liberation Front of Assam militants (girls). He also gave information about nearly 25 armed ULFA militants being present in village Hatigaon. A patrol with a strength of 3 officers, 1 Junior Commissioned Officer and 30 other Ranks immediately rushed to the village. As the vehicle approached the village, a group of young men took to their heels. The patrol jumped out of vehicules and started to chase the hostiles in two directions. Havildar Nimse was once again in the lead. A fleeing hostile jumped into the Nala in an attempt to escape. Havildar

Nimse jumped after the hostile who, seeing his escape route blocked from all slides, grappled with Havildar Nimse, who was by this time fully exhausted after nearly twelve hours of continuous operations. The scuffle continued for about two minutes before both went under water. It was getting dark and both the individuals not to be seen anywhere. A thorogh search was organised the next day and two bodies were recovered by the personnel of the Fire Brigade from same spot in the Nala where they were last seen grappling.

Havildar Trimbak Dada Nimse, thus, displayed indomitable courage and devotion to duty and laid down his life in the finest tradition of the Army

16. 2779648 Sepoy Sudhakar Ghule, *(Posthumous)*
6 Maratha Light Infantry.

(Effective date of award · 30th March 1991)

6 Maratha Light Infantry set out to cordon and search village Sunur Kalipur and Rajwansher in district Aurangabad on the 30th March, 1991. Sepoy Sudhakar Ghule was the light Machine Gun No. 2 of 10 Platoon Delta Company and deployed for the cordoning of the village Sunur Kalipur. Sepoy Sudhakar Ghule and his Light Machine Gun No. 1 Sepoy Nivruti Kotwal were guarding the northern access to the village. Since there were a large number of anti-national elements, in a futile bid to escape, opened heavy volume of fire and tried to break through the cordon. Though wounded by fire of the anti-national elements, killing one of them on the spot. Others immediately turned and fled to safety towards the built up area. However, Sepoy Sudhakar Ghule, though injured, still gave a chase and alongwith Sepoy Nivruti Kotwal managed to apprehend one of the escaping anti-national elements. The remaining anti-national elements were effectively trapped inside the village and caught the next day. Sepoy Sudhakar Ghule succumbed to his injuries but his supreme sacrifice brought very rewarding result to the Battalion, as the trapped anti-national elements perforce had to surrender alongwith their weapons.

Sepoy Sudhakar Ghule, thus, displayed conspicuous bravery, courage and spirit of self sacrifice in the action against anti-national elements.

17. 75089 Rifleman Kameshwar Prasad *(Posthumous)*
Assam Rifles

(Effective date of the award : 5th May 1991)

Rifleman Kameshwar Prasad was Light Machine Gunner number one in the leading section of the column which was deployed to occupy DUDHI Post, in J&K on the 5th May 1991. While approaching DUDHI Post, Rifleman Kameshwar Prasad spotted a large group of anti-national elements. In immediate response to his column commander's orders, he engaged the advancing column of anti national elements, who were numerically superior and were armed with sophisticated weapons and ammunition. With utter disregard to his safety and in his sincere effort to thwart the attempts by the anti-national elements to attack and overpower his column, he kept on moving from position to position to engage the anti-national elements with exceptional skill, thus keeping them at bay for over three and a half hours. His gallant action, outstanding sense of duty, team spirit, exceptional courage and professional skill helped his column to get the better of the anti-national elements and thus, prevent their mass scale infiltration into the Indian territory. He was instrumental in killing seven anti-national elements personally. In the process, he also sustained bullet injuries and died on the spot.

Rifleman Kameshwar Prasad displayed conspicuous gallantry and courage in the face of anti-national elements and made the supreme sacrifice of his life.

18 667412 Sergeant Niranjan Mishra,
Airframe Filter.

(Effective date of the award : 17th May 1991)

Sergeant Niranjan Mishra was detailed as take off Inspector alongwith another Airframe Filter on the 17th May, 1991. They both carried out the tyre checks on a MIG 23 BN aircraft and cleared it for take off The aircraft lined up normally but as soon as reheat was engaged, it swung viciously to the left going off the runway. The aircraft finally impacted a blast pen wall, sustained extensive damage and caught fire. Sgt Mishra ran across the runway to the damaged aircraft and saw that the pilot was trapped inside the burning aircraft. The nose of the aircraft was smashed, the canopy jumped and the pilot was in an awkward position in a dazed condition. Using great presence of mind, Sgt. Mishra broke the shattered canopy with a brick and removed the pieces, thus, making an exit for the pilot The flames had by now risen to the cockpit. and Sgt. Mishra, unmindful of the danger to himself and with great courage assisted plt Offr MS Nival to get out of the burning wreckage with minor injuries. Within minutes of the pilot getting out of the cockpit, the ejection seat fired, a hazard which Sgt. Mishra know could have had fatal consequences both for the pilot and himself while carrying out the rescue.

Sgt. Mishra, true to the tradition of the Air Force, showed great presence of mind, loyalty and even at the risk of his own life displayed courage and fortitude of the highest order. His timely act of valour and action beyond the call of duty, saved the life of a young pilot

19. Shri Mohammad Anwar Hussain,
Aligarh (Uttar Pradesh).

(Effective date of the award : 19th July 1991)

In the early hours of the 19th July, 1991 a goods train which had on board 53 cattle attendants and over 200 cattle stopped between two stations on the Moradabad Division of Northern Railway as the train developed brake power problem. In their efforts to rectify the problem, the driver, the Asstt. Driver and the guard got down from the train and were trying to locate and attend to the possible defect. While they were busy in locating the defect, the brakes of the train got released and the train started moving without the crew in the loco and quickly acquired a very high speed. The cattle attendants on the train realised that something had gone wrong. While all the others sat passively waiting for the worst, Shri Mohd. Anwar Hussain decided to do something to bring the train to a halt. Taking the greatest possible risk, he clambered on top of the wagon in which he was travelling and undaunted by the strong wind and the speeding train, he jumped from wagon to wagon and finally reached the engine cabin. He was shocked to find that there was no body in the cabin. However, he did not lose his courage and started operating the various switches in the locomotive and finally managed to stop the train about 94 kilometres away from the point where it fist started without the crew. But for his daring and gallant act, the entire train with its human cargo and live stock was destined to be destroyed.

Shri Mohammad Anwar Hussain, thus, exhibited exemplary courage in the face of adversity and was able to avert a major accident, thereby saving not only the lives of 53 cattle attendents and over 200 cattle but aso valuable railway property.

20. Shrimati Renu Agarwal, *(Posthumous)*
Sonepat, Haryana.

(Effective date of the award . 27th August, 1991).

On the morning of the 27th August, 1991 Smt Renu Agarwal was at the Sonepat Railway Station alongwith many other commuters on her way to work in Delhi when she saw two children on the railway track in the path of 337 UP Amritsar bound passenger train Realising that the lives of the children were in grave danger, Smt Renu Agarwal, in total disregard to her own safety, dashed to the rescue of the children. Because of her timely action, she was successful in removing the children from the path of the onrushing train and thereby saved their lives. She herself was, however, not able to get off the track in time and was run over.

Smt. Renu Agarwal, thus, exhibited exemplary courage and saved the lives of two children at the cost of her own life.

21. Colonel Rajpal Singh Shergill (IC-23890), Infantry.

(Effective date of the award : 29th October, 1991).

On the 29th October, 1991 Colonel Rajpal Singh Shergill, Commanding Officer 8 Raj Rif got vital information from a very well established battalion intelligence network which revealed that the self styled Lieutenant Megha Natha Phukan, Northern Range Commander and SS Lieutenant Aneerban Hazarika, Chairman, political wing, lakhimpur district alongwith a group of hardcore activists had been seen in the area Gomto. Colonel Shergill chalked out a plan which involved the move of four widely dispersed companies in a synchronised manner and the cordoning off the area but at the same time having complete secracy about the plan. The plan was executed with precision and the four companies established the cordon around village Gomto and sealed off all the exit routes. The cordon was closed forcing the terrorists to flee from their hide outs. On being challenged, the terrorists directed heavy automatic fire and lobbed hand grenades. Colonel Shergill promptly launched a three pronged attack from the north, south and west. From the west, Colonel Shergill's party attacked the dreaded terrorists and in the ensuing fight, SS Lieutenant Megha Phukan was killed and SS Lieutenant Aneerban Hazarika injured and later succumbed to his injuries. Subsequently, after a scuffle five hard core ULFA activities were apprehended. One Chinese M-22 Assault rifle, Chinese Pistol, Chinese hand grenades, 95 rounds of ammunition were also recovered during the operation.

Colonel Rajpal Singh Shergill, thus, displayed conspicuous courage, dynamic leadership and devotion to duty.

No. 22-Pres/92.—The President is pleased to approve the award of 'Vir Chakra' to the undermentioned person for an act of gallantry :—

Captain Vijayant Kumar (IC-42149),

Dogra Regiment.

(Effective date of the award : 30th April, 1989).

Operation IBEX was launched in the Ch umik-Gyongla gralcier Area in Siachen on the 11th April, 1989 with the aim of occupying the Area Point 6400 which is of great tactical importance on the Saltoro Watershed in order to pre-empt the enemy from carrying out its plan of aggression. Captain Vijayant Kumar of 2 dogra was selected as the commander of a special task force. He reached Base camp on the 11th April, 1989 and single-handedly started work on preparing a cheetah Helipad. He supervised the organisation of the support base and the stupendous task of opening the route from base to the top of Point 6400. Captain Vjayant Kumar moved forward with four men on the 26th April, 1989 and occupied the bimp, approximately 500 metres away from Point 6400, which was the key to the successful defence of Point 6400. From here, Captain Vijayant Kumar personally registered a number of targets. He controlled and directed artillery and mortar fire with superb confidence to inflict severe punishment on the enemy targets. On the evening of the 30th April, 1989, suddenly, the sentry gave the alarm "Dushman, Dushman" and fired his rifle. Almost immediately his weapon suffered 'cold arrest' and ceased functioning. A group of aproximately 10 Pakistanis taking adventage of the poor visibility had come very close and were at a distance of ten metres from his patrol. They started engaging the sentry with well directed small arms fire. The sentry was mortally wounded and had collapsed. Without losing any time Captain Vijayant Kumar ordered his group to open fire and himself opened fire with the 84 mm Rocket Launcher using air burst ammunition. With one of his soldiers dying and one Light Machine Gun and two of his other personal weapons suffering cold arrest it was a very difficult situation. Despite these handicaps, the enemy attack was effectively repulsed with his group having suffered approximately seven casualties. Not content with this, Captain Vijayant Kumar, with Utter disregard to his personal safety, crawled approximately 15 metres down the forward slope and cut the enemy's fixed ropes. Immediately thereafter he reorganised his group and directed accurate artillery fire on the enemy. On the 1st May, 1989 they withdrew to Point 6400, bringing back the body of the sentry and all their weapons and their radio set. For the period from the 1st May to the 4th May, 1989 Captain Vijayant Kumar continued to assit Major SL Gautam in organising the defence. Throughout they were subjected to accurate enemy artillery and mortar fire. Finally, on the 5th May, 1989 an exhausted Captain Vijayant Kumar suffering third degree frost-bite on his right hand and toes was evacuated by helicopter to the base camp.

Captain Vijayant Kumar thus displayed conspicuous courage and valour in the face of the enemy.

No. 23-Pres/92.—The President is pleased to approve the award of the 'Param Vishisht Seva Medal' to the undermentioned personnel for distinguished service of the most exceptional order :—

1. Lieutenant General Harwant Singh (IC-7697), AVSM, Armoured Corps.
2. Lieutenant General Ajai Singh (IC-7745), AVSM, Armoured Corps.
3. Lieutenant General Jagdish Singh (IC-6703), Vr.C, Artillery.
4. Lieutenant General Tej Pratap Singh (IC-7048), AVSM, Artillery.
5. Lieutenant General Malay Kumar Lahiri (IC-7012), Infantry.
6. Lieutenant General Francis Tiburtius Dias (IC-7044), AVSM, Vr.C, Infantry.
7. Lieutenant General Vijay Madan (IC-7057), VSM, Infantry.
8. Lieutenant General Nirendra Chandra Sanyal (MR-00904), Army Medical Corps.
9. Lieutenant General Dharam Vir Kalra (IC-7107), AVSM, Army Ordinance Corps.
10. Lieutenant General Kuldip Kumar Mehra (IC-7958), Electrical and Mechanical Engineers.
11. Lieutenant General Ajab Singh Bhullar (IC-6125), AVSM, Eectrical and Mechanical Engineers (Retired).
12. Lieutenant General Mahendra Singh Gosain (IC-6610), AVSM, VSM, Engineers (Retired).
13. Vice Admiral Kankipati Appala Satyanarana Zagapathi Raju, AVSM, NM, 00304 R.
14. Vice Admiral Vasant Laxman Koppikar, AVSM, 00180-H.
15. Vice Admiral Shriniwas Wamanrao Lakhkar, NM, VSM, 00191 H.
16. Vice Admiral Indrashil Chennagiri Rao, AVSM, 40061 Y.
17. Air Marshal Swaroop Krishna Kaul, MVC (4721) Flying (Pilot).
18. Air Marshal Sukhdev Mohan, AVSM (4789) Flying (Pilot).
19. Air Marshal Pinnapakkam Masilamani Sundaram, AVSM (4857) Medical.
20. Air Marshal Indrakanty Gopala Krishna, AVSM, VSM (5398), Aeronautical Engineering (Mechanical).
21. Air Marshal Abraham Mathews, AVSM (4547), Aeronautical Engineering (Electronics) (Retired).
22. GO-300-F Devaraja Sankara Narayana Ayyar, Additional Director General Boarder Roads (Retired).

A. K. UPADHYAY,
Director

No. 24-Pres/92.—The President is pleased to approve the award of 'Uttam Yuddh Seva Medal" to Brigadier Ajai Barnabas Masih (IC-14667), Infantry for distinguished service of an exceptional order.

No. 25/Pres/92.—The President is pleased to approve the award of the 'Ati Vishisht Seva Medal' to the undermentioned personnel for distinguished service of an exceptional order :—

1. Lieutenant General Rade Sham Bhola (MR-01395), Army Medical Corps.
2. Major General Satish Mohindra (IC-7381), Army Ordnance Corps.
3. Major General Ashok Kumar Dasgupta (IC-8606), Engineers.
4. Major General Prem Paul Singh (IC-11542), VSM, Infantry.
5. Major General Mohinder Mohan Walia (IC-11830), SM, Infantry.
6. Major General Amitava Mukherjee (IC-12149), Artillery.
7. Major General Dipankar Banerjee (IC-12313), Infantry.
8. Major General Rajpal Singh (IC-12369), SM, Infantry.
9. Major General Ratnakar Purushottam Limaye (IC-11188), Infantry.
10. Rear Admiral Vijay Kumar Malhotra, VSM, 00396 Z.
11. Rear Admiral Ranjit Kumar Whig, VSM, 40152 B.
12. Surgeon Rear Admiral Ganesh Prasad Panda, 75068H.
13. Commodore Baldev Bhasin, 60132 N.
14. Commodore Om Prakash Bansal, VSM, 00660 Z.
15. Commodore Arun Prakash, Vr. C. VSM, 00590 R.
16. Commodore Kurupath Vasupurath Vijayagopalan, VSM, 00785 H.
17. Air Marshal Majit Singh Boparai (MR-00936), Army Medical Corps.
18. Air Vice Marshal Sindhaghatta Subbaramu, Vr. C. (5371) Flying (Pilot).
19. Air Vice Marshal Sabnavis Tirumala Rao (5530) Accounts.
20. Air Commodore Sudarshan Kumar Nijhawan, VSM (6223-L) Aeronautical Engineering (Mechanical).
21. Air Commodore Kuldip Raj Lamba, VSM (6242-T), Aeronautical Engineering (Mechanical).
22. Air Commodore Vinod Kumar Bhatia, Vr. C & Bar (6497) Flying (Pilot).
23. Air Commodore Darshan Singh Basra, VM (6519) Flying (Pilot)
24. Group Captain Ashok Kumar Mehta, VSM (6631-T), Logistics.
25. Group Captain Dhanwant Singh Guram (10916) Flying (Pilot).
26. Group Captain Padamjit Singh Ahluwalia, VM VSM (11631) Flying (Pilot).
27. Group Captain Dalbir Singh Yadav, VM (4241) Flying (Pilot).
28. GO-170-K Chief Engineer Dipti Nath Ghosal.

No. 26-Pres/92.—The President is pleased to approve the award of "Yuddh Seva Medal" to Flight Lieutenant Pradeep Gupta (17349) Flying (Pilot) for distinguished service of a high order.

No. 27-Pres/92.—The President is pleased to approve the award of "Sena Medal/Army Medal" to the undermentionedd officers/Personnel foi act of exceptional devotion to duty or courage :—

1. Colonel Rajender Singh (IC-23928), Kumaon Regiment.
2. Colonel Swaran Singh Hoda (IC-23634), Engineers.
3. Lieutenant Colonel Ashok Raj Phoha (IC-24620), Artillery.
4. Lieutenant Colonel Ramesh Halgali (IC-27290 M), The Sikh Light Infantry.
5. Lieutenant Colonel Eranna (IC-32569), Garhwal Rifles.
6. Major Vijay Kumar Singh (IC-30355), 13 Punjab.
7. Major Siddhappa Naikar (IC-31574), Signals.
8. Major John Sampat Kumar Rao (IC-37026), Bihar Regiment.
9. Major Ranbir Singh (IC-31327), Bihar Regiment.
10. Major Rahul Keshavrao Bhonsle (IC-30074), Jammu & Kashmir Rifles.
11. Major Mahesh Kumar Mathur (IC-31066), Rajputana Rifles.
12. Major Virinder Singh Dadhwal (IC-31672), Garhwal Rifles.
13. Major Shashank Mehta (IC-34120), 8 Gorkha Rifles.
14. Major Kanwal Jit Singh Rana (IC-34796), Army Ordnance Corps.
15. Major Ranjan Tandon (IC-35176), Armoured Corps.
16. Major Mahendra Singh (IC-36282), Rajputana Rifles.
17. Major Arvind Nigam (IC-36941), Dogra Regiment.
18. Major D Pradeep Kumar (IC-37016), 1 Gorkha Rifles.
19. Major Patel Porandla Suresh Kumar (MR-5575), Army Medical Corps.
20. Major Kular Baldev Singh (IC-27093), Punjab.
21. Major Ramesh Kumar Nawani (IC-31168), Dogra Regiment
22. Major Ashok Kumar Barua (IC-34979), Artillery.
23. Major Dilip Prasad (IC-39081), 20 Kumaon.
24. Major Christopher Emmanuel Fernandes (IC-39500), 6 Bihar.
25. Captain Victor Peter Christopher (IC-47887) 6 Bihar.
26. Captain Mohan Govindan Nair (IC-39642), Maratha Light Infantry.
27. Captain Achath Kuttysankara Ravindran (IC-42978), Artillery.
28. Captain Sunil Pratap Rao Bhosle (IC-45535), The Jat Regiment.
29. Captain Sukhcharan Singh Rai (SS-33254), Rajput Regiment.

30. Captain Parkash Chand (RC-335), Punjab Regiment.
31. Second Lieutenant Anupam Bhagi (IC-48522), Dogra Regiment.
32. Second Lieutenant Gautam Chadha (IC-48543), Army Service Corps.
33. Second Lieutenant Amandeep Singh Shere Grewal (IC-49053), Brigade of Guards.
34. Second Lieutenant Thytharayil Jacob Zacharia (IC-49060), Artillery.
35. Second Lictuenant Anil Rana (IC-49064), 18 Dogra.
36. JC-145637 Subedar Gopal Tamang, 11 Gorkha Rifles.
37. JC-153030 Subedar Kanshi Ram Rajput, Jammu and Kashmir Rifles (*Posthumous*)
38. JC-162582 Subedar Kanshi Ram, Signals.
39. JC-73132 Subedar Kalu Thapa, Assam Rifles.
40. JC-156862 Naib Subedar Parameshwaran Bhaskaran Pillai, Madras Regiment.
41. JC-157789 Naib Subedar Raghavan Nair Rajan, Guards.
42. JC-178543 Naib Subedar Shyam Singh, 17 Rajput.
43. JC-185738 Naib Subedar Maha Singh, 17 Rajput.
44. JC-NYA-1543986 Naib Subedar Parle Yashwant Ganapati, Engineers.
45. 13668923 Company Havildar Major Sher Singh, 5 Guards.
46. 1[illegible]737734 Havildar Ashok Kumar, 3 Jammu and Kas[illegible]mir Rifles.
47. 1445519[illegible] Havildar Setharamesami Nagarajan, Artillery.
48. 14318372 Hav[illegible]ldar Raje Singh, Artillery (*Posthumous*)
49. 2465383 Havildar Sw[illegible]ran Singh, Punjab Regiment.
50. 2469015 Havildar Yog [illegible]Raj, Punjab Regiment.
51. 3373717 Havildar Swaran [illegible]Singh, 7 Sikh.
52. 3167428 Lance Havildar Radha Karan, Jat Regiment.
53. 3975272 Lance Havildar Balraj S[illegible]ngh, Dogra Regiment.
54. 13616144 Naik Surender Singh, Parachute Regiment (*Posthumous*)
55. 14350219 Naik Rabindra Nath DC, Artillery.
56. 1555042 Naik Nirbhar Singh, Engineers.
57. 2877179 Naik Naresh Singh, 4 Rajputana Rifles.
58. 3376500 Naik Dalip Singh, Sikh Regiment (*Posthumous*)
59. 3975530 Naik Pardeep Singh, 18 Dogra.
60. 3975735 Naik Sita Ram, Dogra Regiment.
61. 4255018 Naik Mundrika Prasad Sharma, Bihar Regiment.
62. 2477591 Lance Naik Avtar Singh, Punjab Regiment.
63. 3379371 Lance Naik Balwinder Singh, 6 Sikh (*Posthumous*).
64. 4175802 Lance Naik Gopal Singh, Kumaon Regiment (*Posthumous*).
65. 13744209 Lance Naik Surjit Singh, Jammu and Kashmir Rifles.
66. 14910839 Sepoy Krishan Kumar, Mechanised Infantry.
67. 2474613 Sepoy Vijay Singh Chandel, Punjab Regiment (*Posthumous*).
68. 2477518 Sepoy Parithpal Singh, Punjab Regiment.
69. 2481214 Sepoy Sawarn Singh, Punjab Regiment (*Posthumous*).
70. 2786622 Sepoy Kotwal Nivruti Yeshwant, Maratha Light Infantry.
71. 3383694 Sepoy Bakhshish Singh, Sikh Regiment (*Posthumous*)
72. 3387216 Sepoy Lakhwinder Singh, Sikh Regiment (*Posthumous*)
73. 3988440 Sepoy Tilak Raj, 18 Dogra.
74. 4261356 Sepoy Bikrma Singh, Bihar Regiment (*Posthumous*)
75. 4266603 Sepoy Surjeet Singh, Bihar Regiment (*Posthumous*)
76. 4266587 Sepoy Tonnar Momin, Bihar Regiment.
77. 4268897 Sepoy Lalan Singh, Bihar Regiment.
78. 4469467 Sepoy Balkar Singh, Sikh Light Infantry.
79. 2883059 Rifleman Sushir Kumar, 4 Rajputana Rifles.
80. 37730 Rifleman Mahendra Singh, 3 Assam Rifles (*Posthumous*)
81. 4065120 Rifleman Vashudev Singh, Garhwal Rifles.
82. 9085511 Rifleman Mohd Shafi Quraishi, Jammu and Kashmir Light Infantry.
83. 74910 Rifleman Binod Das, Assam Rifles (*Posthumous*)
84. 75463 Rifleman Balwant Singh, Assam Rifles.
85. 75482 Rifleman Ram Kumar Arya, Assam Rifles (*Posthumous*)
86. 66221450 Head Constable Jasmer Singh, 36 Battalion Border Security Force.
87. Assistant Commandant Hira Bahadur Gurung (AR-168), 7 Assam Rifles.
88. 800671528 Constable Mahabir Prasad Meena, Central Reserve Police Force (*Posthumous*)

BAR to SENA MEDAL

Major Gurinder Singh (IC-36063) SM Brigade of the Guards.

No. 28-Pres/92.—The President is pleased to approve the award of "Nao Sena Medal"/"Navy Medal" to the undermentioned personnel for acts of exceptional devotion to duty or courage :—

1. Captain Vijaya Swarup Bhatnagar, 00868 Y.
2. Captain Sangram Singh Byce, 00883 F.
3. Acting Captain Sunil Krishanaji Damle, 01168 B.

4. Commander Brijesh, 01250 R.
5. Commander Arjun Singh Bhatyal, 01520 B.
6. Commander Thatala Nagir Reddy, 01674 B.
7. Acting Commander Ranveer Singh, 01708 F.
8. Lieutenant Commander Arunakirithevar Saravanaperumal, 40640 N.
9. Lieutenant Commander Ravinder Singh Gill, 01781 Y.
10. Lieutenant Commander Sebastian Anolphous Anchees, 01869 Y.
11. Lieutenant Commander Sanjay Govind Karve, 02055 W.
12. Lieutenant Commander (SDP) Manohar Singh Negi, 86826 F.
13. Lieutenant Dinesh Rai, 02726 W.
14. Lieutenant Perumbilavil Raj Kumar, 03228 K.

No. 29-Pres/92.—The President is pleased to approve the award of "Vayu Sena Medal/"Air Force Medal" to the undermentioned officers/personnel for exceptional devotion to duty or courage :

1. Group Captain Arun Dattatraya Karandikar (10865) Flying (Pilot).
2. Group Captain Fali Homi Major (11442) Flying (Pilot).
3. Wing Commander Sonjoy Bose (12757) Flying (Pilot) (*Posthumous*)
   (*Posthumous*)
4. Wing Commander Jitender Paul Singh (63594) Flying (Pilot).
5. Wing Commander Mohammed Reza Shirazi, SC (7705) Flying (Pilot).
6. Wing Commander Mandhir Singh (9806) Flying (Pilot).
7. Wing Commander Ronald Banerjee (11398) Flying (Pilot).
8. Wing Commander Guriqbal Singh Nijjar (12020) Flying (Pilot).
9. Wing Commander Ram Mohan Shridharan (12033) Flying (Pilot).
10. Wing Commander Suresh Chandra Mukul (12930) Flying (Pilot).
11. Wing Commander Noel Amiyakumar Moitra (12931) Flying (Pilot).
12. Wing Commander Paramjit Singh Bhangu (12932) Flying (Pilot).
13. Wing Commander Mohan John (13131) Flying (Pilot).
14. Wing Commander Pradeep Kinra (13778) Flying (Pilot).
15. Squadron Leader Kuldeep Malik (15181) Flying (Pilot).
16. Squadron Leader Vinod Kumar Singh (15192) Flying (Pilot).
17. Squadron Leader Ashish Ranjan (16230) Flying (Pilot).
18. Squadron Leader Vyakaranam Venkata Surya Subba Rao (16633) Flying (Pilot).
19. Flight Lieutenant Pasupathy Venkataraman (18689) Flying (Pilot).

No. 30-Pres/92.—The President has been pleased to give orders for publication in the Gazette of India of the name of Second Lieutenant Vijay Kumar Prasad Sharma (IC-49448), Artillery mentioned in the despatches received by the Defence Minister from the Chief of the Army Staff in connection with the operation Meghdoot.

A. K. UPADHYAY,
Director

LOK SABHA SECRETARIAT

New Delhi-110 001, the 9th March 1992

No. 4/3(ii)/EC/92.—Shri R. Jeevarathinam, M.P. has been elected to serve on the Committee on Estimates (1991-92) w.e.f. March 6th, 1992 for the unexpired portion of the terms of the Committee *vice* Shri Vijay N. Patil, M.P. resigned from the Committee.

B. B. PANDIT
Director

AGRICULTURE COMMITTEE BRANCH

New Delhi-110 001, the 12th March 1992

No. 6/3(i)/1/AC/91.—Shri R. Jeevarathinam, M.P. has resigned from the Membership of the Committee on Agriculture w.e.f. March 4, 1992.

K. K. PANDA
Director

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

New Delhi, the 10th March 1992

No. 21021/2/91-Hindi.—Under Sub-Rule 10(4) of the OL Rules, 1976, the Central Government hereby notify the office of the Dakshin Bengal Frontier Headquarter, Border Security Force, where the percentage of Hindi knowing staff has increased above 80%.

L. K. GARG
Dy. Secy.

प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, फरीदाबाद द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशन नियंत्रक, दिल्ली द्वारा प्रकाशित, 1992
Printed by the Manager, Govt. of India Press, Faridabad & Published by the Controller of Publications, Delhi—1992